





अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट अहमदाबाद

अभिव्यक्ति हिंदी गृह पत्रिका



वर्ष 2016



भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

हिंदी तकनीकी संगोष्ठी 2016



लेख संग्रह का विमोचन करते हुए श्री तपन मिश्रा, निदेशक, डॉ.दामोदर खड़से, श्री डी.के.दास, श्री राजीव ज्योति, श्री दिलीप आर पटेल एवं श्री बी.आर.राजपूत



संगोष्ठी के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण करते हुए डॉ.दामोदर खड़से, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति साथ में श्री तपन मिश्रा, निदेशक, सैक एवं अन्य सैक वैज्ञानिक

हिंदी माह - 2016



हिंदी माह उद्घाटन समारोह के दौरान दीप प्रज्ज्वलित करते हुए श्री तपन मिश्रा, निदेशक, श्री डी.के.दास, सह निदेशक, श्री सी.एन.लाल एवं श्रीमती नीलू सेठ



सैक की इंटरनेट वेबसाइट के हिंदी संस्करण का विमोचन करते हुए श्री तपन मिश्रा, निदेशक, श्री डी.के,दास, सह निदेशक, एवं श्रीमती नीलू सेठ, वरि.हिंदी अधिकारी

अहमदाबाद नराकास से प्राप्त पुरस्कार



नराकास अध्यक्ष से चल वैजयंती ग्रहण करते हुए सैक के सह निदेशक श्री डी.के.दास एवं वरि.हिंदी अधिकारी श्री बी.आर.राजपूत



अहमदाबाद नगर में श्रेष्ठ हिंदी कार्यावन्यन के लिए अध्यक्ष, नराकास से प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री विरेन्दर कुमार, निदेशक—डेकू

अभिव्यक्ति, अंक-10

2016

अभिव्यक्ति हिंदी गृह पत्रिका अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

तथा

वर्षः 2016

अंकः10

विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट अहमदाबाद

	•
परम	सरक्षक

श्री तपन मिश्रा, निदेशक, सैक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

<u>संरक्षक</u>

श्री डी. के. दास, सह-निदेशक, सैक

श्री विरेन्दर कुमार, निदेशक, डेक् एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेक्

<u>मार्गदर्शन</u>

श्री पीयूष वर्मा, नियंत्रक, सैक एवं सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

सलाहकार मंडल

श्री सी. एन. लाल, प्रधान-प्र.एवं ज.सं. श्री सुरेश के., प्रधान का. एवं सा. प्र. श्री धर्मेश भट्ट, वैज्ञा. / अभि. -एसएफ श्री मुकेश कुमार मिश्र, पुस्तकालय अधिकारी

प्रधान संपादक

श्रीमती नीलू एस. सेठ, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

<u>संपादक</u>

श्री सोन् जैन, हिंदी अधिकारी, सैक

प्रबंध संपादक

सुश्री रजनी सेमवाल, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्रीमती सोमा करनावट, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोग

श्री जी. एल. त्रिवेदी, वरिष्ठ सहायक

आवरण पृष्ठ डिजाइन

मल्टीमीडिया लैब, डेक्

<u>मुद्रण</u>

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग

<u>छायांकन</u>

फोटोलैब-ईपीएसए-एटीडीजी-आरएसीएफ

<u>अनुक्रमणिका</u>

संपादकीय	2
संदेशः निदेशक, सैक	3
संदेशः सह-निदेशक, सैक	4
संदेशः निदेशक, डेकू	5
संदेशः नियंत्रक, सैक	6
पाठकों की कलम से	7
सैक/ डेक् में राजभाषा गतिविधियां	8
ऊष्मा की कुछ रोचक बातें	11
दुल्हन की डोली	16
छुट्टी यात्रा रियायत (एलटीसी) जानकारी एवं सुझाव	17
कृत्रिम उपग्रह और घर - कुछ साम्यताएँ	19
मेरा खोया ह्आ सामान	21
अनुवादक	21
मेलुंहा के मृत्युंजय	22
पेड़ों की छाया	23
कर्तव्य या अधिकारः सामाजिक, आर्थिक व	24
राजनैतिक परिपेक्ष्य	24
कवि की व्यथा	25
इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम - मांडू	26
भजन	27
वर्ग पहेली	28
मंगलयान की मंगल यात्रा	30
रिपोर्ट - हिंदी तकनीकी संगोष्ठी-2016	32
रिपोर्ट - राजभाषा कार्यशाला	34
रिपोर्ट - नराकास गतिविधियाँ	36
रिपोर्ट - हिंदी माह - 2016	38

नोटः यह आवश्यक नहीं है कि संपादक मंडल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचारों और उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से सहमत हो।

मुखपृष्ठः नाविक उपग्रह मंडल का चित्र और पत्रिका के शीर्षक के नीचे रिसोर्ससैट-2ए का चित्र मुद्रित किया गया है

संपादकीय.

भाषा हमारे विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है। एक ग्रीक दंतकथा के अनुसार पहले सभी मनुष्य एक ही भाषा बोलते थे, अतः सभी एक-दूसरे की बात समझ सकते थे। एक बार मनुष्यों ने ऐसी मीनार बनाने का निर्णय लिया जो स्वर्ग तक पहुँच सके। यह निर्माण-कार्य प्रारंभ होने पर देवताओं को बहुत चिंता हुई। उन्होंने सोचा कि यदि मनुष्य स्वर्ग तक पहुँच गया तो हम देवों की सत्ता के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। एक रात जब सब मनुष्य सो रहे थो तब देवताओं ने सभी मनुष्यों की भाषा अलग-अलग कर दी। अगले दिन जब लोग कार्य-स्थल पर पहुँचे तो कोई किसी की बात समझ नहीं पा रहा था। सहयोग के अभाव में अंततः मीनार के निर्माण को रोकना पड़ा और देवताओं पर आया खतरा टल गया। तभी से मनुष्य की भाषाएँ अलग-अलग हो गईं।

यह कहानी छोटी-सी है लेकिन हमें बहुत कुछ सिखा जाती है। जैसे, एक-दूसरे को समझ न पाने से रचनात्मक कामों में बाधा आती है। समझ का अभाव सिर्फ भाषा अलग होने से नहीं होता। यह तब भी हो सकता है जब दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़ जाएँ और दूसरे के नजिरए को खारिज कर दें। इस कहानी से यह भी पता चलता है कि संगठन में शक्ति होती है और किसी के संगठन को छिन्न-भिन्न करके उसकी प्रगति रोकी जा सकती है।

हमारे देश में एक रचनात्मक कार्यक्रम प्रारंभ हुआ है - मेक-इन-इंडिया। यह एक बहुत बड़ा स्वप्न है कि हमारे देश में हर प्रकार की वस्तुओं का निर्माण हो। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए जरूरी है कि हम अपनी भिन्नता को परे रखें और देश की प्रगति के लिए मिलकर काम करें। किसी भी तरह के बहकावे में आकर अपने संगठन की शक्ति को कम न होने दें।

मेक-इन-इंडिया की सफलता सही मायनों में तब ही होगी जब शहरी-ग्रामीण, हर क्षेत्र के हर तबके के लोग इससे जुड़ेंगे। यह जुड़ाव उनकी अपनी भाषा में समझाने से आएगा। इसलिए जरूरी है कि हम स्वदेशी वस्तुओं और स्वदेशी भाषाओं का उपयोग करने में शर्म महसूस करना छोड़कर गर्व महसूस करें। जब तक मातृभाषा और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को हीनता की दृष्टि से देखा जाएगा, तब तक हम एक राष्ट्र के तौर पर उन्निति नहीं कर पाएँगे।

(संपादक मंडल)

तपन मिश्रा, निदेशक, सैक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

<u>संदेश</u>

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक) अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, विशेषकर उपग्रह नीतभार व उनकी उप-प्रणालियों और अंतरिक्ष अनुप्रयोग के क्षेत्र में कार्यरत इसरो/ अंतरिक्ष विभाग का अग्रणी अनुसंधान एवं विकास केंद्र है। केंद्र के लिए वर्ष 2016 नाविक, आरआईसैट, जीसैट, कार्टीसैट, रिसोर्ससैट श्रृंखला के उपग्रहों के लिए नीतभार डिजाइन एवं विकसित करने की दृष्टि से बहुत व्यस्ततापूर्ण रहा है।

हर मिशन की सफलता के साथ देश की अपेक्षाएं और वैज्ञानिकों की बेहतर करने की चाह बढ़ती जाती है, जिससे परिणामस्वरूप परियोजनाओं में मात्रात्मक और गुणात्मक वृद्धि होती जाती है। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा है, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारी कुशलता भी बढ़ रही है और चुनौतियाँ भी। इन व्यस्तताओं के बीच साहित्य और लेखन के लिए समय निकालना वाकई अद्भुत संयोग है। सैक एक ओर पूरी निष्ठा से अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश की सेवा के लिए समर्पित है, साथ ही साथ संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में सदा अग्रणी रहने का प्रयास करता रहा है।

केंद्र का यह प्रयास रहा है कि अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित नवीनतम ज्ञान विज्ञान की भाषा हिंदी बने। प्रतिवर्ष हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन, लेख-संग्रह का प्रकाशन, केंद्र की इंटरनेट वेबसाइट "व्योम" को पूर्णतः द्विभाषी करना और उसे अद्यतित रखना, ग्रामीण विद्यालयों में जाकर "भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलिकयाँ" नामक कार्यक्रम के साथ देशभर में वीएसएसई प्रदर्शनी का आयोजन, आदि अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं। मुझे खुशी है कि राजभाषा कार्यान्वयन की इसी कड़ी में केंद्र की हिंदी वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन एक श्रमसाध्य कार्य है, 'अभिव्यक्ति' के लिए लिखने वाले सभी लेखक, कवियों और विशेषकर संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हृदय से शृभकामनाएं देता हूँ।



डी. के. दास सह निदेशक, सैक



<u>संदेश</u>

बड़े हर्ष का विषय है कि अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की वार्षिक हिंदी पित्रका अभिव्यक्ति का 10वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सरकार ने प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति को माध्यम बनाया है, जिससे लोग भारतवर्ष में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी को स्वेच्छा से गौरव के साथ अपनाएं। हिंदी पित्रका के प्रकाशन का उद्देश्य भी लोगों की सृजनात्मकता को राजभाषा से जोड़ना है।

इसरो जैसी विशुद्ध वैज्ञानिक और तकनीकी संस्था में राजभाषा कार्यान्वयन को भी अपेक्षित महत्व प्रदान किया जाता है। जैसे-जैसे उपग्रहों और प्रमोचन यानों के विकास में हर मिशन के साथ नयी उपलब्धियाँ जुड़ती चली जा रही हैं, उसी प्रकार राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी हम किसी प्रकार से पीछे नहीं हैं। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति इसी सजगता और गंभीरता का परिणाम है कि सैक और डेक् को पिछले कुछ वर्षों से अहमदाबाद नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से पुरस्कृत किया जाता रहा है।

14 सितंबर 2016 को इसरो/ अंतरिक्ष विभाग की उपलब्धियों में एक और अध्याय जुड़ गया, जब भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इसरो/ अंतरिक्ष विभाग को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया। ये उपलब्धियाँ ही हमें हर क्षेत्र में कठिन लक्ष्य निर्धारित करने का बल देती हैं।

सैक/ डेकू के वैज्ञानिक/ अभियंता और अन्य स्टाफ सदस्य अपने दैनंदिन निर्धारित कार्यालयीन कामकाज के साथ-साथ व्यस्तता के बीच समय निकालकर अतिरिक्त श्रम करते हुए इस पित्रका के लिए रचनाएं लिखते हैं और प्रकाशन के लिए भेजते हैं मैं उनकी सराहना करता हूँ। संपादक मंडल का भी प्रयास सराहनीय है। मैं पित्रका के सफल प्रकाशन के लिए रचनाकारों और संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

विरेन्दर कुमार,

निदेशक, डेक् एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेक्



<u>संदेश</u>

हाल ही में भारत ने अंतिरक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनेक अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल करते हुए विश्वमंच पर अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज की है। इसरो/ अंतिरक्ष विभाग ने संचार, सुदूर संवेदन, नौवहन, मौसम विज्ञान, अंतर-ग्रहीय वैज्ञानिक मिशन, रॉकेट निर्माण, अंतिरक्ष आधारित अनुप्रयोग, आदि अंतिरक्ष विज्ञान से जुड़े क्षेत्रों में सफलता हासिल की है। इन सफलताओं के मूल में भारतीय अंतिरक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई ने सामाजिक हित में अंतिरक्ष प्रौद्योगिकी के दोहन का जो मूलमंत्र दिया, उसके निर्वहन में भी हम किसी भी प्रकार से पीछे नहीं है।

इसरो का विकास और शैक्षिक संचार यूनिट (डेक्) अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और समाज के बीच एक सेतु का काम कर रहा है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आधारित उपग्रह संचार भू-तंत्र, दूर-शिक्षा, दूर-चिकित्सा आदि कार्यक्रम डॉ. साराभाई की इसी संकल्पना का मूर्त रूप हैं। इस दिशा में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए मल्टीमीडिया कार्यक्रमों का निर्माण, प्रसारण और प्रशिक्षण के साथ-साथ आवश्यकता का आकलन करने के लिए सामाजिक अनुसंधान और मूल्यांकन आदि गतिविधियाँ भी डेक् द्वारा संचालित की जाती है। सामाजिक सारोकार में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, इसीलिए संघ सरकार की राजभाषा भी हमारी कार्यसूची का एक महत्वपूर्ण बिंदु है। मुख्य धारा के कार्य-कलापों में हिंदी के प्रयोग की बात हो या राजभाषा नीति नियमों के अनुपालन, राजभाषा को हम सदैव वरीयता देते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप विगत कुछ वर्षों से डेक् को अहमदाबाद नराकास की ओर से केंद्र सरकार के कार्यालयों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम प्रस्कार से सम्मानित किया जाता रहा है।

सैक और डेक् की वार्षिक हिंदी पित्रका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रसार की दिशा में ही एक प्रयास है। मुझे हर्ष है कि पित्रका का 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं पित्रका में प्रकाशित रचनाओं के सर्जकों और संपादक मंडल को पित्रका के सफल प्रकाशन के लिए तहेदिल से शुभकामनाएं देता हूँ।

(विरेन्दर कुमार)

पीयूष वर्मा, _{भा. द. से.} नियंत्रक, एवं

सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

<u>संदेश</u>



यह हर्ष का विषय है कि अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट के कार्यालय अपनी वार्षिक गृह पत्रिका अभिव्यक्ति के 10वें अंक का प्रकाशन करने जा रहे हैं। राजभाषा के प्रचार व प्रसार की दृष्टि से यह सराहनीय प्रयास है।

हिंदी जन-जन की भाषा है। हिंदी को अपने संपर्क संवाद का माध्यम बनाकर हमें आधुनिकतम ज्ञान-विज्ञान को आम जनता तक पहुँचाना चाहिए। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है लेकिन भाषा सरल व सहज होनी चाहिए। 'अभिव्यक्ति' सरल व सहज भाषा में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अग्रसर है, जिसमें पाठकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

यह पत्रिका रूचिपूर्ण तो है ही साथ-साथ राजभाषा क्रिया-कलापों की जानकारियों से सुसज्जित भी है। इससे यह जात होता है कि इस केंद्र के कर्मचारियों में हिंदी के प्रति कितना लगाव व उत्साह है। विगत कई वर्षों से सैक और डेक् अतंरिक्ष विज्ञान से संबंधित विविध विषयों पर हिंदी तकनीकी संगोष्ठियों का आयोजन कर रहा है तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए "भारतीय अंतिरक्ष कार्यक्रम की झलिकयाँ" कार्यक्रम आयोजित कर अंतिरक्ष विज्ञान संबंधी महत्वपूर्ण उपलब्धियों से गुजरात राज्य के दूर-दराज के विद्यार्थियों को परिचित कराता आ रहा है। इसके अलावा हिंदी के मंगलयान एटलस का प्रकाशन दर्शाता है कि तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी लेखन की ओर हम अग्रसर हैं। मुझे इस बात का अपार हर्ष है कि वैज्ञानिक हिंदी में सरल लेख, कविताएं और कहानियाँ प्रस्तुत करते हैं। सृजनात्मकता अनंत तक सोचने की क्षमता प्रदान करती है। अतः वैज्ञानिक कार्यों के साथ-साथ सृजनात्मकता की ओर झुकाव प्रेरणा का कार्य करता है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा प्रचार-प्रसार के इस पुनीत कार्य में सभी सहयोग देते रहेंगे।

अभिव्यक्ति की सफलता के लिए संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

जयहिंद।

(पीयूष वर्मा, भा. द्. से.)

पाठकों की कलम से. . .

आपके द्वारा प्रेषित "अभिव्यक्ति" गृहपत्रिका का नौवां अंक प्राप्त हुआ है। पत्रिका में छपे सभी लेख सराहनीय हैं। इसरों के मंगलयान संबंधी कविता "मंगलाष्टक" बहुत सुंदर है। "श्री सूक्तम" की व्याख्या भी ज्ञानप्रद है। "एक माँ की कहानी" हृदय को छू लेने वाली है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी को उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक बधाई।

सरला, वरि. हिंदी अधिकारी, इसरो उपग्रह केंद्र, बेंगलुरू

पिछले अंकों की भाँति वर्तमान अंक भी काफी रोचक, ज्ञानवर्धक एवं विविधतापूर्ण है। यह अंक दोनों संस्थानों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है। जीएसटी के बारे में नियंत्रक जी का लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक, समसामयिक एवं विश्लेषणात्मक है। कमलेश कुमार बराया जी की लेखनी से निसृत ज्ञान-गंगा विषय पर उनका असाधारण अधिकार सहजता से सिद्ध करती है। 'समय और माँ', 'एक माँ की कहानी' तथा 'नारी' एक ओर जहाँ जननी, माता तथा स्त्री को उनका यथोचित स्थान दिलाने के सार्थक प्रयास हैं, वहीं 'मंगलाष्टक' हमारे विश्वविख्यात प्रथम मंगल अभियान का गौरवमय जयघोष है। 'श्री सूक्तम' यदि हमारी धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नयन की कुंजी है, तो 'सप्तरंगी की सुगंधित राखी' कोमलता एवं प्रेरणा का संगम है। 'हिंदी पखवाड़ा' हिंदी के मानवीकरण के माध्यम से हिंदी श्रेष्ठता और व्यापकता का वास्तविक चित्रण है। अभिव्यक्ति के नए अंक के कुशल संपादन हेतु पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं नव वर्ष की शुभकामनाएं।

डॉ.शंकर कुमार, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, अंतरिक्ष विभाग (शाखा सचिवालय), नई दिल्ली

आपके कार्यालय से प्रकाशित "अभिव्यक्ति" पित्रका के नवीनतम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। "ऊष्मा की कुछ रोचक बातें" का द्वितीय भाग भी पहले भाग की तरह काफी ज्ञानवर्धक है। "श्री सूक्तम" का संकलन भी ज्ञान के भंडार को दर्शा रहा है। पित्रका में दी गई प्रत्येक रचना प्रत्येक लेखक की रचना-धर्मिता को काफी अच्छी तरह से प्रस्तुत कर उभार रही है। ऐसी रचनाओं से पित्रका का स्तर भी निरंतर आगे बढ़ रहा है। इस प्रयास के लिए सबको हार्दिक अभिनंदन व आगे भी ऐसी रचनाओं से युक्त पित्रका की प्रतीक्षा के साथ, इसके प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाइयाँ।

आर. माहेश्वरी अम्मा, हिंदी अधिकारी, वीएसएससी, त्रिवेंद्रम्

"अभिटयक्ति" को आपने इतना रोचक बनाया है कि कुछ पन्ने पलटने के उद्देश्य से हाथ में ली गई अभिटयक्ति ने मुझे अपने से अलग नहीं होने दिया। अभिटयक्ति के निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकामना।

दिनेश कुमार, नामित राजभाषा अधिकारी, ओएनजीसी, अहमदाबाद

आपकी गृहपत्रिका "अभिव्यक्ति" हमें प्राप्त हुई। इसके लिए सधन्यवाद अभिनंदन स्वीकार करें। पत्रिका की जिल्द चित्ताकर्षक है। पत्रिका के खोलते ही दिए गए संदेश से प्रेरणा मिलती है। अंदर के पृष्ठों में विभाग में होने वाली गतिविधियों के साथ-साथ ज्ञानवर्धक सामग्री है, जो आने वाले आर्थिक माहौल का संकेत देती है। इसके अलावा धरती से संबंधित ज्ञानकारी और माँ की ममता भी ध्यान आकर्षित करती है। आशा है भविष्य में भी इस प्रकार की ज्ञानकारी से पूर्ण एवं हृदयस्पर्शी पत्रिका प्रकाशित की जाती रहेंगी।

किशोर सिंह, प्रबंधक राजभाषा, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, अहमदाबाद

अंतिरक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (इसरो), अहमदाबाद की हिंदी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का नौवा अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं कविताएं काफी सराहनीय हैं। अभिव्यक्ति के इस अंक की बधाई और भविष्य में प्रकाशित होने वाले अंकों के लिए शुभकामनाएं।

अरुण कुमार शर्मा, वरि.हिंदी अनुवादक, द्रव नोदन प्रणाली केंद्र (एलपीएससी), बेंगल्रू

अभिव्यक्ति, अंक-10

2016

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट में हिंदी गतिविधियाँ

उपलब्धियाँ

- वर्ष 2015-16 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन तथा सैक परिसर में नराकास बैठक की मेजबानी के लिए सैक को नराकास अहमदाबाद की ओर से चल वैजयंती प्रदान की गई। यह चल वैजयंती सैक के सह-निदेशक श्री डी. के. दास तथा वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत ने श्री बलवीर सिंह, अध्यक्ष नराकास/ प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात के कर-कमलों से ग्रहण की।
- वर्ष 2015-16 के दौरान 100 से कम स्टाफ सदस्यों वाले केंद्रीय सरकार के कार्यालय की श्रेणी में विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेक्) को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार डेक् निदेशक श्री विरेन्दर कुमार ने श्री बलवीर सिंह, अध्यक्ष नराकास/ प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात के कर-कमलों से ग्रहण किया। श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी को भी प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिहन प्रदान किया गया।
- 13 जून 2016 को एसडीएससी, शार, श्रीहरिकोटा में आयोजित तकनीकी हिंदी संगोष्ठी के राजभाषा सत्र के लिए अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के 5 लेख चयनित हुए।
- 05 अगस्त 2016 को आईआईआरएस, देहरादून द्वारा अंतर केंद्र तकनीकी हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के 5 लेख प्रस्तुत किए गए। इस संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में सैक के श्री कृपाशंकर सिंह को प्रथम पुरस्कार तथा राजभाषा सत्र में श्री दिनेश अग्रवाल को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

विशेष गतिविधियाँ

- 21 जुलाई 2016 को "भारतीय अतंरिक्ष कार्यक्रम में मेक-इन-इंडिया अभिगम" विषय पर हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया, इसके साथ ही मेक-इन-इंडिया की सफलता में राजभाषा की भूमिका" विषय पर राजभाषा सत्र भी शामिल किया गया। संगोष्ठी में तकनीकी और राजभाषा सत्र के लिए कुल 50 लेख प्राप्त हुए। संगोष्ठी के लेख संग्रह का विमोचन किया, लेख संग्रह संगोष्ठी के लेखक प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत लेखों का संकलन है। संगोष्ठी के लेख संग्रह को सीड़ी के रूप में भी तैयार किया गया। संगोष्ठी का आयोजन कुल 7 सत्रों में किया गया, जिनमें से प्रथम सत्र में राजभाषा से संबंधित लेख और शेष 6 सत्रों में तकनीकी लेख प्रस्तुत किए गए। इसके अतिरिक्त 1 पोस्टर सत्र भी रखा गया था, जिसमें लेखकों ने अपने लेख को पोस्टर के माध्यम से प्रस्तुत किया। प्रत्येक सत्र की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों तथा संगोष्ठी के अन्य प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए।
- सैक तथा डेकू में विगत कई वर्षों से हिंदी माह का आयोजन किया जाता है जिसमें कार्यालय के कर्मचारी अत्यंत उत्साह से प्रतिभागिता देते हैं। वर्ष 2016 में भी सितंबर माह के दौरान हिंदी माह का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन के साथ हिंदी माह प्रारंभ हुआ और उसके बाद हिंदी माह के दौरान विविध 14 प्रतियोगिताओं का आयोजन गया। हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता में स्टाफ सदस्य उल्लास के साथ भाग लेते हैं। हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता 2 भागों में आयोजित की जाती है पहले ऑनलाइन (स्टाफ सदस्य अपने डेस्कटॉप पीसी से भाग ले सकते हैं) ,तत्पश्चात मौखिक रूप से आयोजित की जाती है। गत वर्ष से इस प्रतियोगिता में स्व-प्रश्नोत्तर कोष द्वारा स्टाफ सदस्यों से प्रश्न मंगाए जा रहे हैं। सर्वाधिक योगदान देने वाले कर्मचारी को मौखिक राउंड में वाइल्ड कार्ड एंट्री दी गई। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के बच्चों तथा विवाहितियों के लिए भी विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, जिसमें विवाहितियों के लिए आयोजित हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता काफी रोचक व लोकप्रिय है। इस वर्ष कर्मचारियों के लिए भी अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसे बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला और लोगों ने बहुत

उत्साह से इसमें भाग लिया। हिंदी माह के दौरान 01 सितंबर से 30 सितंबर 2016 तक सैक पुस्तकालय में वर्ष के दौरान खरीदी गई हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

- निदेशक, सैक की अध्यक्षता में सैक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 143वीं, 144वीं तथा 145वीं बैठक का आयोजन किया गया। इसमें संबंधित तिमाहियों के दौरान केंद्र में राजभाषा नीति के अनुपालन की समीक्षा की गई। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। समिति में चर्चा के उपरांत राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2016-17 की प्रति सभी संबंधितों को परिचालित की गई और सभी कर्मचारियों के ध्यान में लाने के लिए इंट्रानेट वेबसाइट "आकाश" पर भी अपलोड की गई।
- अंतिरिक्ष उपयोग केंद्र की इंटरनेट वेबसाइट "व्योम" के अंग्रेजी संस्करण को अगस्त में अद्यतित किया गया था। 01 सितंबर को हिंदी माह के उद्घाटन कार्यक्रम में निदेशक, सैक के कर-कमलों से इसके हिंदी संस्करण का विमोचन हुआ। साइट की सभी सामग्री अंग्रेजी तथा हिंदी में एक साथ अद्यतित की जा रही है।
- वर्ष के दौरान अभी तक 3 राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें 08/ 03/ 2016 को वैयक्तिक सचिव और परियोजना वैयक्तिक सचिवों, 20/ 06/ 2016 को प्रभाग प्रधान और समकक्ष अधिकारियों और 19/ 09/ 2016 को वैज्ञानिक सहायक, तकनीकी सहायक और पुस्तकालय सहायकों को संघ की राजभाषा नीति, नियम तथा कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत सैक में नविनयुक्त प्रशासिनक सहायकों और पदोन्नित प्राप्त कार्यालय लिपिकों को जनवरी-जुलाई 2016 सत्र के दौरान कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रशिक्षण दिया गया। हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों के लिए नए प्रशिक्षण कार्यक्रम "पारंगत" की प्रथम बैच जुलाई- नवंबर 2016 के दौरान चलाई गई। सैक और डेक् के 48 सहायकों और विरष्ठ सहायकों ने 20-21 नवंबर 2016 को आयोजित पारंगत प्रशिक्षण की लिखित और मौखिक परीक्षा में भाग लिया।
- वर्ष के दौरान अधिकतर कार्यालयीन काम हिंदी में करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत हिंदी भाषा वर्ग और हिंदीतर भाषा वर्ग के स्टाफ सदस्यों को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अलावा तकनीकी अनुभागों में हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान प्रोत्साहन योजना लागू गई तथा पुरस्कार प्राप्त करने वाले तकनीकी अनुभागों को गणतंत्र दिवस के अवसर पर निदेशक द्वारा शील्ड प्रदान की गई।
- 13 मई 2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन सिमिति, अहमदाबाद के तत्वावधान में हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में नराकास अहमदाबाद के विविध सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों द्वारा 44 कविताएँ प्रस्तुत की गईं। निदेशक, सैक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इस प्रतियोगिता के प्रतिभागियों का उत्साह देखते हुए लगता है कि सरकारी कर्मचारी मात्र अपने कार्य के प्रति ही समर्पित नहीं हैं अपितु उनमें मृजनात्मकता भी कूट-कूटकर भरी है। श्री विरेन्दर कुमार, निदेशक, डेकू ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए केंद्र की हिंदी अधिकारी श्रीमती नीलू सेठ, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत, राजभाषा कार्यान्वयन सिमिति के मार्गनिर्देशन में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अथक प्रयास करते हैं। प्रतियोगिता के प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सफल आयोजन हेत् उन्होंने सभी को श्भकामनाएँ दीं।
- 26 जुलाई 2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की बैठक का आयोजन किया गया। इसमें अहमदाबाद के केंद्रीय सरकार के लगभग 145 कार्यालयों की उपस्थिति रही। बैठक की अध्यक्षता श्री बलवीर सिंह ने की। सैक की ओर से सह-निदेशक श्री डी. के. दास, श्री राजीव ज्योति, उप-निदेशक, एमआरएसए तथा वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत भी मंच पर आसीन थे। राजभाषा विभाग की

अभिव्यक्ति, अंक-10

ओर से डॉ. सुनीता यादव, उप-निदेशक कार्यान्वयन भी मंच पर आसीन रहीं। बैठक में विरेन्दर कुमार, निदेशक डेकू भी उपस्थित रहे।

- 20 अक्तूबर 2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के तत्वावधान में हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में नराकास अहमदाबाद के विविध सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों द्वारा 54 कविताएँ प्रस्तुत की गईं। प्रतियोगिता के संचालन में समिति ने अथक परिश्रम दर्शाते हुए सभी कवियों को प्रस्तुति हेतु आमंत्रित किया। कवि द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक कविता से संबंधित पोस्टर एवं कविता का शीर्षक, कवि का नाम, संबंधित कार्यालय का नाम आदि विवरण मंच पर स्क्रीन पर प्रदर्शित किए जा रहे थे। सभी प्रतिभागियों द्वारा इस प्रयास को काफी सराहा गया। विविध कवियों द्वारा स्तरीय कविताएँ प्रस्तुत की गईं। सभी कविताएँ रोचक एवं रसप्रद थीं, जिन्होंने श्रोताओं को बांधे रखा। कार्यक्रम करीब 4 घंटे चला।
- अंतिरक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेक्), अहमदाबाद में जनवरी 2016 में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर 11 जनवरी 2016 को सैक तथा डेक् के कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध एवं हिंदी वार्तालाप प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और उन्होंने कार्यालयीन एवं निजी जीवन में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने तथा अन्य लोगों को भी हिंदी अपनाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प दोहराया।
- अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी विक्रम साराभाई मौलिक पुस्तक लेखन योजना का सभी स्टाफ सदस्यों के बीच व्यापक परिचालन किया गया।
- केंद्र के सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों के लिए प्रत्येक माह आयोजित होने वाले विदाई समारोह संबंधी सभी कार्य हिंदी में किए गए।
- केंद्र की मासिक प्रगति रिपोर्ट का हर माह नियमित रूप से हिंदी रूपांतरण तैयार कर विभाग को प्रेषित किया गया।
- 26 जनवरी 2016 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान सैक/ डेक् में हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों/ प्रोत्साहन योजनाओं के विजेता प्रतिभागियों/ अनुभागों को विविध श्रेणियों में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए पुरस्कृत किया।
- हिंदी कार्यान्वयन समिति द्वारा सैक तथा डेक् के आंतरिक अनुभागों का निरीक्षण किया गया तथा अनुभागों में हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए समिति द्वारा एक रिपोर्ट निदेशक को प्रस्तुत की गई। निदेशक महोदय के आदेश से समिति की सिफारिशों के आधार पर संबंधित अनुभागों को हिंदी कार्यान्वयन के अनुपालन के लिए निर्देश जारी किए गए।
- राष्ट्रीय सुद्र संवेदन केंद्र, हैदराबाद के नियंत्रक श्री विभास सिंह गुप्ता ने 10 नवंबर 2016 को केंद्र का राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित वार्षिक निरीक्षण किया। उन्होंने अंतिरक्ष उपयोग केंद्र में हिंदी कार्यान्वयन की सरहाना की।
- राजभाषा विभाग द्वारा जारी लक्ष्यों के अनुसार पुस्तकालय में हिन्दी पुस्तकों की खरीद की गई। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

सामान्य पुस्तकों पर	अंग्रेजी पुस्तकों पर	पत्रिकाओं पर किया	हिंदी पुस्तकों पर	कुल हिंदी
किया गया कुल खर्च	किया गया कुल खर्च		किये गए खर्च का	पुस्तकों की
58371. 00	11927. 00	गया खर्च 46444. 00	प्रतिशत 79. 56%	संख्या 174

<u> जष्मा की कुछ रोचक बातें</u>

कमलेश कुमार बराया

वैज्ञानिक/ अभियंता-एस एफ

1. क्या बर्फ से बने घर ठण्ड से बचा सकते हैं?

आर्कटिक के ठण्डे प्रदेशों जैसे साइबेरिया, उत्तरी कनाड़ा एवं ग्रीनलैण्ड में रहने वाले एस्किमो लोग ठण्ड के मौसम में शिकार के दौरान अस्थायी शरण स्थल के रूप में बर्फ के घरों का निर्माण करते हैं, जिन्हें इग्लू कहा जाता है। ठण्ड के मौसम में इन क्षेत्रों में तापमान -45°C से भी नीचे चला जाता है। इतने कम तापमान के साथ तेज सर्द हवाओं के कारण ठण्ड का प्रभाव और अधिक दुष्कर हो जाता है। ऐसे वातावरण में एस्किमो लोग ठण्ड से बचाव के लिए बर्फ के गुम्बदनुमा घरों, इग्लुओं का निर्माण करते हैं। बर्फ से बने होने के बावजूद भी एस्किमो लोग इग्लू के अंदर का तापमान उसके बाहर के तापमान से लगभग 50°C अधिक बनाए रखने में कामयाब हो जाते हैं। इग्लू के अंदर आरामदायक तापमान बनाए रखने के लिए एस्किमो लोग कुछ युक्तियां अपनाते हैं।

इग्लू के निर्माण के लिए बर्फ को खण्डों के रूप में काटकर गुम्बदनुमा आकृति के रूप में व्यवस्थित किया जाता है। गुम्बदनुमा आकृति न्यूनतम सतही क्षेत्रफल में अधिक से अधिक जगह घेर सकती है। न्यूनतम क्षेत्रफल के कारण सतह के द्वारा बाहरी वातावरण को ऊष्मा की हानि भी न्यूनतम हो जाती है। तेज हवाओं के कारण ठण्ड का असर अधिक हो जाता है। इग्लू की दीवारें इसके अंदर रहने वाले लोगों को तेज ठण्डी हवाओं के प्रभाव से बचा कर ठण्ड का असर बहुत कम कर देती हैं।

इग्लू के निर्माण में मुख्य बात यह है कि वे इसे अधिक से अधिक ऊष्मारोधी बना देते हैं। जिससे इग्लू के बाहर ठण्डे कर्कश वातावरण का न्यूनतम प्रभाव हो। इग्लू के अंदर रहने वाले लोगों के शरीर से उत्सर्जित ऊष्मा ऊर्जा तथा तेल का एक दीपक ही इग्लू के अंदर ऊष्मा के मुख्य स्रोत होते हैं। इग्लू के अंदर वातावरण को आरामदायक बनाने के लिए इस ऊष्मा को बाहर जाने से रोकना आवश्यक है। इग्लू की दीवारें इस ऊष्मा ऊर्जा को इग्लू के अंदर ही रोक कर रखती है, जो इग्लू के अंदर के तापमान को बढ़ाने में मदद करती है।

एस्किमो इग्लू बनाने के लिए उस बर्फ का उपयोग करते हैं जो वायु द्वारा उड़ कर छोटे-छोटे कणों के रूप में गिरकर जमीन पर जमा होती जाती है। इन बर्फ के कणों के मध्य हवा भी उपस्थित होती है, जिससे यह अधिक ऊष्मारोधी हो जाती है। इसलिए ऐसी बर्फ से बनी दीवार घर के अंदर की ऊष्मा को बाहर जाने से रोकती है।

इग्लू का प्रवेश द्वार रहने के स्थान से नीचे के तल पर होता है तथा आराम करने का स्थान ऊपर के तल पर होता है। तेल के दीपक और लोगों की ऊष्मा से गर्म हुई हवा ऊपर उठ कर आराम करने के स्थान पर जाकर गर्मी पहुंचाती है, जबिक ठण्डी हवा भारी होने के कारण प्रवेश द्वार के सिंक पर एकत्र हो जाती है। इग्लू में प्रवेश का मार्ग सीधा नहीं होकर 90 डिग्री के मोड़ के साथ होता है जिससे बाहर की ठण्डी हवा सीधे अंदर प्रवेश नहीं कर सकती है। प्रवेश का मार्ग प्रवेश द्वार के नीचे बर्फ खोदकर गुफानुमा बनाया जाता है तथा प्रवेश द्वार को जानवरों की खाल के फ्लैप से कवर कर दिया जाता है जिससे अंदर की गर्म हवा को रोककर रखा जा सके। घुटन से बचने के लिए इग्लू के शीर्ष स्तर पर दीवार में छिद्र बनाए जाते हैं। आराम करने के स्थान पर भी जानवरों की खाल और फर का उपयोग किया जाता है जिससे शरीर की ऊष्मा को संरक्षित किया जा सके। इसके अतिरिक्त इग्लू के अंदर एस्किमो लोग समूह में आराम करते हैं जिससे अंदर के वातावरण को गर्म रखने के लिए अधिक ऊष्मा उपलब्ध हो सके।

इग्लू के अंदर की दीवारों की सतह गर्मी पाकर थोड़ी-थोड़ी पिघलने लगती है तथा इग्लूवासी जब शिकार पर जाते हैं तो उनकी अनुपस्थिति में वह ठण्ड के कारण वापस जम जाती है। दीवारों की सतह के पिघलने एवं वापस जमने के चक्र के कारण इग्लू की संरचना पहले से अधिक मजबूत एवं ऊष्मारोधी हो जाती है तथा शिकार से लौटकर आने वाले एस्किमो लोगों के लिए और अधिक आरामदायक घर बन जाता है।

2. बर्फ के रुप में जमी ह्ई झीलों के अंदर जीव जन्तु कैसे जीवित बच पाते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें तापमान के साथ पानी के व्यवहार को जानना आवश्यक है। सामान्य द्रव पदार्थ तापमान बढ़ने के साथ फैलते हैं तथा तापमान घटने पर संकृचित हो जाते हैं। हम दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि तापमान के बढ़ने से द्रव पदार्थों के घनत्व में कमी आती है तथा तापमान के घटने से द्रव पदार्थों के घनत्व में बढ़ोतरी हो जाती है। लेकिन पानी विशेष परिस्थितियों में सामान्य द्रव पदार्थों के विपरीत व्यवहार दिखाता है। पानी 4°C के तापमान पर असाधारण व्यवहार का प्रदर्शन करता है। वाय्मण्डलीय दाब पर पानी को सामान्य तापमान से 4°C तक ठण्डा करने पर उसके घनत्व में बढ़ोतरी होती है लेकिन उसके तापमान को 4°C से कम करने पर तापमान में कमी के साथ घनत्व में भी कमी आती है, अर्थात उसके आयतन में वृद्धि होने लगती है। यह पानी का असामान्य व्यवहार है। अतः हम कह सकते हैं कि सामान्य वाय्मण्डलीय दाब पर पानी का घनत्व 4°C पर अधिकतम होता है। 4°C पर पानी के तापमान को बढ़ाने या घटाने पर उसके घनत्व में कमी आती है। हम जानते हैं कि 0 °C पर पानी द्रव से ठोस बर्फ के रूप में परिवर्तित होने लगता है। पानी जब बर्फ के रूप में जम जाता है तो उसका घनत्व द्रव अवस्था की त्लना में 9 प्रतिशत कम हो जाता है। इसलिए हम बर्फ को हमेशा पानी में तैरते हुए देखते हैं। पानी के इस असाधारण व्यवहार का कारण पानी के अण्ओं के मध्य हाइड्रोजन बॉण्ड हैं। जमाव बिंद् के नजदीक के तापमान पर हाइड्रोजन बॉण्ड पानी के अण्ओं को अधिक दूरी पर रखते हैं जिससे पानी का घनत्व कम हो जाता है। 4°C पर अणुओं के मध्य दूरी न्यूनतम होती है जिससे पानी का घनत्व अधिकतम हो जाता है। 4°C पर पानी के अधिकतम घनत्व के परिणामस्वरूप ताजे पानी की कोई झील या तालाब के सम्पूर्ण पानी का तापमान उसके बर्फ के रूप में जमने से पहले 4°C पर पह्ंचना आवश्यक हो जाता है।

जब वायुमण्डल के तापमान में कमी आने लगती है तो झील की सतह के पानी का तापमान भी सतह से उष्मा की हानि के कारण गिरने लगता है। जब सतह का तापमान ठण्डा होते - होते 4°C तक पहुंचता है तो उसका घनत्व सतह के नीचे वाले जल से अधिक हो जाता है, क्योंकि 4°C पर पानी का घनत्व अधिकतम होता है। सतह के पानी का घनत्व अंदर के पानी के घनत्व से अधिक होने के कारण सतह का पानी नीचे चला जाता है तथा उसके स्थान पर नीचे के स्तर का पानी जो अधिक गर्म होता है, आ जाता है। पानी का यह प्रवाह जब तक चलता रहता है जब तक कि सभी स्तरों पर पानी का तापमान 4°C न हो जाए। अलग-अलग स्तरों पर तापमान में अंतर के परिणामस्वरूप घनत्व में अंतर के कारण पानी के इस प्रवाह को ऊष्मीय संवहन कहते हैं। ऊष्मीय संवहन के कारण नीचे के स्तरों के पानी में वायुमण्डलीय ऑक्सीजन का स्तर भी बढ़ जाता है जो जन्तुओं के जीवित रहने के लिए भी आवश्यक होती है। इसके बाद वायुमण्डल का तापमान और गिरने से सतह के पानी का तापमान 4°C से भी नीचे चला जाता है। लेकिन अब सतह के पानी का तापमान तो गिर जाता है, साथ ही उसका घनत्व भी कम हो जाता है। अब ऊपरी सतह के पानी का घनत्व नीचे के स्तर के पानी की बाहरी सतह बर्फ के रूप में जमने लगती है, लेकिन बर्फ के नीचे की सतह के पानी का घनत्व बर्फ से अधिक होने का कारण बर्फ पानी पर तैरती है, परिणामस्वरूप बर्फ पानी के अंदर नहीं डूबती है। बर्फ ऊष्मा की कुचालक होने से नीचे के स्तर के पानी की जहमा को बाहरी वातारण में आने से भी रोक कर रखती है। सतह पर बर्फ की परत के कारण अंदर के पानी से

वायुमण्डल की ओर संवहन और विकिरण दोनों ही तरीकों से ऊष्मा की हानि बंद हो जाती है। इसलिए बर्फ के नीचे के स्तरों के पानी के तापमान के गिरने की दर में अत्यधिक कमी हो जाती है।

झील या तालाब की ऊपरी सतह बर्फ के रूप में जमने के बाद नीचे के स्तरों पर तापमान बढ़ने के साथ-साथ पानी के घनत्व में भी बढ़ोतरी होती जाती है इसलिए ऊपर के स्तरों के ठण्डे पानी का नीचे की ओर प्रवाह अर्थात ऊष्मीय संवहन बंद हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप नीचे के स्तरों के पानी का तापमान 4°C पर ही बना रहता है। इस तापमान पर जीव जन्तु आसानी से जीवित रह पाते हैं तथा वे स्वयं को बाहरी सतह पर जमी बर्फ की ठण्ड से रक्षा कर पाते हैं।

3. क्या बर्फ के फूल भी पौधों की टहनियों पर उग सकते है?

हां, बर्फ के फूल या हिम पुष्प जिन्हें आइस फ्लॉवर या फ्रॉस्ट फ्लॉवर के नाम से भी जाना जाता है, वातावरण की अन्कूल परिस्थितियों में पौधों की टहनियों पर उग सकते हैं। ये हम उस बर्फ की बात नहीं कर रहे हैं जो हवा के साथ उड़ कर आती है और पेड़ों पर जमा हो जाती है। ये आइस फ्लॉवर टहनियों और जड़ों में विद्यमान जल से ही निर्मित होते हैं। ठण्डे प्रदेशों में शरद ऋतु के प्रारम्भ के दिनों में सुबह के समय जब हवा का तापमान जमाव बिंदु से कम हो लेकिन जमीन पर बर्फ नहीं जमी हो, साथ ही जमीन का तापमान इतना हो कि पौधों की जड़े ठण्ड के कारण निष्क्रिय न हुई हो तथा मिट्टी में पर्याप्त नमी हो तो ऐसा वातावरण हिम पुष्पों के निर्माण के लिए उपयुक्त होता है।



अमेरिका के ओजार्क पर्वतों में हिम पुष्प

(स्रोतः https://en. wikipedia. org/ wiki/ Frost flower)

हम यह जानते है कि पानी का तापमान जब जमाव बिंदु के निकट पहुंचने लगता है तो वह आयतन में फैलता है, इसे पानी का असामान्य व्यवहार भी कहते हैं। पौधों के तनों या टहनियों के अंदर विद्यमान पानी ठण्डा होने के कारण जब फैलता है तो दबाव के कारण तने की बाहरी सतह पर दरार उत्पन्न हो जाती है, जिसमें से तने के अंदर का पानी बाहर निकलने लगता है। यह पानी उस हवा के संपर्क में आने पर, जिसका तापमान जमाव बिंदु से नीचे होता है, बर्फ के रूप में जम जाता है। जड़ों का पानी केशिका प्रभाव के कारण तने की ओर खिंचता रहता है जिससे तने में जल की सतत आपूर्ति होती रहती है। जड़ों से आने वाला नया जल भी ठण्डा होने पर दरार पर बनी

बर्फ को आगे धक्का लगाते हुए निकलता है और ठण्डी हवा के सम्पर्क में आने पर जम जाता है। इस तरह बर्फ आगे बढ़ती रहती है और एक पत्ती की शक्ल ले लेती है। यह ऐसा प्रतीत होता है जैसे बर्फ दरार का वेधन करती हुई बाहर निकल रही हो। यही बर्फ जब पर्याप्त लम्बाई में निर्मित हो चुकी होती है तो पुष्प की तरह दिखाई देने लगती है।

4. अंटार्कटिका के बर्फीले क्षेत्रों में पंग्इन ठण्ड से कैसे स्रक्षित रहती है?

पेंगुइन उष्ण रक्ती (Hot blooded) पक्षी होती है अर्थात उग्र ठण्ड में भी उसके शरीर का आन्तरिक तापमान एक नियत स्तर पर बना रहता है। पेंगुइन के शरीर का आंतरिक तापमान लगभग 38℃ होता है।

पेंगुइन अंटार्किटिका जैसे बर्फीले क्षेत्रों में रहती है जहां का तापमान जमाव बिंदु से कई डिग्री नीचे तक चला जाता है। पेंगुइन इतने कम तापमान में कैसे सुरक्षित रह पाती है? पेंगुइन के शरीर में ऐसी कई विशेषताएं होती है जिससे उसका शरीर आसानी से ठण्डे तापमान का मुकाबला कर लेता है।

पेंगुइन के शरीर का आकार गोलाकार एवं बड़ा होता है। इससे पेंगुइन के शरीर का आयतन अधिक होते हुए भी शरीर के बाहरी आवरण का क्षेत्रफल न्यूनतम होता है। बाहरी आवरण के क्षेत्रफल न्यूनतम रखने से वातावरण को ऊष्मा की हानि भी न्यूनतम हो जाती है, परिणामस्वरूप उसे अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए कम ऊष्मा ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि अत्यधिक ठण्डे क्षेत्रों में पाए जाने वाले पेंगुइन पक्षी आकार में अपेक्षाकृत बड़े होते हैं।

अत्यधिक ठण्डे वातावरण में तापमान बनाए रखने के लिए शरीर पर ऐसा आवरण होना चाहिए जो आंतिरक ऊष्मा को बाहर जाने से रोक सके। क्योंकि हम जानते हैं कि ऊष्मा अधिक तापमान से कम तापमान की ओर स्थानांतिरत हो जाती है। ऊष्मारोधी पदार्थों में ऊष्मा संचरण की दर बहुत कम होती है अर्थात उनमें ऊष्मा को रोककर रखने की सामर्थ्य अधिक होती है। पेंगुइन के शरीर को ऊष्मारोधी बनाने के लिए उसके शरीर पर वसा की मोटी परत होती है। यह वसा की परत उसके शरीर की आंतिरक ऊष्मा को बाहर आने से रोकने का कार्य करती है। जब पेंगुइन पानी के अंदर होती है तब भी यह मोटी वसा की परत अच्छे ऊष्मारोधन का कार्य करती है। पेंगुइन के शरीर पर वसा की परत के ऊपर एक दूसरे को ढकते हुए पंखों की परत होती है जो पानी और हवा दोनों के लिए लगभग अभेद्य होती है। पंखों के अंदर फंसी हुई हवा की परत भी अच्छे ऊष्मारोधन का कार्य करती है। लेकिन ठण्डे पानी में वसा और पंखों का आवरण ही तापमान बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं होता है, उसे ऊष्मा ऊर्जा की आपूर्ति के लिए पानी के अंदर निरन्तर सक्रिय भी रहना पड़ता है। गर्म क्षेत्रों में रहने वाले पेंगुइन पिक्षियों में वसा की परत की मोटाई तथा पंखों की लंबाई अपेक्षाकृत कम होती है।

पेंगुइन के शरीर के दोनों ओर फ्लिपर्स होते हैं जो उसे जमीन पर संतुलन बनाए रखने तथा पानी के अंदर तैरने में मददगार होते हैं। अधिक ठण्ड में पेंगुइन इन फ्लिपर्स को अपने शरीर से चिपकाकर रखती है। गर्मी होने पर शरीर से गर्मी निकालने के लिए इन फ्लिपर्स को फैला दिया जाता है। पेंगुइन के शरीर की पृष्ठीय सतह पर गहरे रंग के पंख सौर किरणों को अवशोषित कर शरीर का तापमान बढ़ाने में मदद करते हैं। जब पेंगुइन जमीन पर होती है तब उसके शरीर का वजन उसके पैर की एड़ियों तथा पूंछ के सहारे ही टिका होता है, इस तरह बर्फीले ठण्डे धरातल और उसके शरीर की सतह के मध्य न्यूनतम संपर्क होने के कारण शरीर से ऊष्मा की हानि भी कम हो जाती है।

पंगुइन की टांगों और फ्लिपर्स में काउंटर फ्लो ऊष्मा विनियामक होता है जो उसके टांगों और फ्लिपर्स के सिरों को कम तापमान पर रखते हुए शरीर की ऊष्मा को बचा कर रखता है। उसकी टांगों और फ्लिपर्स से ठण्डा रक्त शरीर के अंदर की ओर जाता है तो वह उसके हृदय से आते हुए गर्म रक्त से ऊष्मा पाकर थोड़ा गर्म हो जाता है, जिससे टांगों और फ्लिपर्स की ओर आते हुए रक्त का तापमान कम हो जाता है। इस तरह पंगुइन की टांगों और फ्लिपर्स में रक्त कम तापमान पर ही होता है। इसलिए टांगों और फ्लिपर्स द्वारा वातावरण को ऊष्मा की हानि कम हो जाती है क्योंकि टांगों की सतह ही बर्फीले धरातल के सम्पर्क में होती है तथा फ्लिपर्स की सतह ठण्डी हवा के संपर्क में होती है। किसी सतह और उसके वातावरण का तापमान में जितना कम अंतर होगा उस सतह से ऊष्मा की हानि भी उतनी ही कम होगी।

पंगुइन ठण्ड से बचने के लिए एक और रोचक तरीके का उपयोग करती है। हजारों पंगुइन समूह में रहती हैं। समूह में रहने के कारण समूह के अंदर वाले पंगुइन ठण्डे वातावरण के बजाय पंगुइनों से ही घिरे रहेंगे। समूह में रहने से संवहन और विकिरण दोनों विधियों के द्वारा ऊष्मा की हानि कम हो जाती है। समूह के मध्य हवा में ऊष्मा ट्रैप हो जाती है जो पंगुइनों को आरामदायक तापमान उपलब्ध कराने में सहायक होती है। समूह की सीमाओं पर जो पंगुइन होती है उन्हें वातावरण के ठण्डे तापमान का सामना करना पड़ता है। इसलिए सीमाओं पर खड़ी पंगुइन समूह के मध्य खड़ी पंगुइनों से बारी-बारी से स्थान की बदली करती रहती है। इस तरह के सहयोग से सभी पंगुइन आरामदायक तापमान का लाभ उठा पाती है।

5. ऊष्मा विज्ञान के क्षेत्र के अग्रणी वैज्ञानिक जोसेफ फोरियर के जीवन के कुछ रोचक पहलू

जोसेफ फोरियर का जन्म 21 मार्च 1768 में फ्रांस में हुआ था। वे एक दर्जी के बेटे थे, नौ वर्ष की उम्र में ही वे अनाथ हो गए थे। फोरियर असाधारण गणितज्ञ और भौतिक विज्ञानी होने के साथ-साथ अच्छे इतिहासकार और प्रशासक भी थे। फोरियर मिस्र के इतिहास के जानकार भी थे। उन्होंने फोरियर सीरीज की सर्वप्रथम खोज की थी तथा ऊष्मा चालन एवं कम्पनों की समस्याओं को हल करने में उसका उपयोग किया। ठोस पदार्थों में ऊष्मा संचरण के नियम को फोरियर के नियम के नाम से जाना जाता है। ठोस पिण्डों में ऊष्मा संचरण के सिद्धांत का फोरियर ने ही सर्वप्रथम ठीक तरह से प्रतिपादन किया।

बचपन से ही फोरियर प्रतिभाशाली छात्र थे। गणित विषय में उनकी गहरी रूचि थी। उन्हें मोमबत्ती के बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा करने का शौक था जिनको जला कर वो देर रात तक अध्ययन करते थे। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्हें गणित में अध्ययन करने के लिए प्रथम पुरस्कार मिला था। फोरियर सेना के लिए कार्य करने की महत्वाकांक्षा रखते थे। लेकिन सेना में उनका आवेदन यह बताकर अस्वीकार कर दिया कि वे उच्च कुल के परिवार से नहीं है। उन्होंने 19 वर्ष की उम्र में पादरी बनने के लिए प्रशिक्षण लेने का निश्चय कर लिया था। लेकिन उन्होंने गणित में अध्यापन का कार्य जारी रखा और गणित विषय में गहरी रूचि होने के कारण उन्होंने धार्मिक प्रशिक्षण छोड़ दिया। गणित में शोध के अतिरिक्त राजनीति और इतिहास में भी उनकी रूचि थी।

फ्रांस की क्रान्ति में फोरियर ने सिक्रय रूप से भाग लिया था और इसके लिए वे जेल भी गए थे। एक बार तो फोरियर को ऐसा भी लगा था कि उन्हें फांसी पर चढ़ाया जा सकता है लेकिन सौभाग्यवश राजनीतिक कारणों से वे बच गए। वे नेपोलियन के विश्वास पात्र थे। 1798 में फोरियर नेपोलियन के मिस्र अभियान में वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में जुड़े थे। मिस्र में उन्हें गवर्नर के पद पर नियुक्त किया गया। फोरियर ने मिस्र में शिक्षा संस्थानों को स्थापित करने एवं पुरातत्व अन्वेषणों के कार्यों में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। अभिव्यक्ति, अंक-10 2016

फोरियर के अनुसार पृथ्वी की सूर्य से दूरी तथा पृथ्वी के आकार के हिसाब से पृथ्वी का तापमान जो हम महसूस करते हैं उससे बहुत कम होना चाहिए। इसलिए फोरियर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पृथ्वी के तापमान को बनाए रखने लिए ऊष्मा को रोकने में पृथ्वी के वातावरण की भी महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। पृथ्वी के तापमान को बनाए रखने में उसके वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका को आज हम ग्रीन हाउस प्रभाव के नाम से भी जानते हैं। इसलिए फोरियर को ग्रीन हाउस प्रभाव की खोज का भी श्रेय दिया जाता है, हालांकि फोरियर ने इस प्रभाव को यह नाम कभी नहीं दिया था।

फोरियर ने ऊष्मा चालन के गणितीय सिद्धांत का अध्ययन किया। सर्वप्रथम उन्होंने ही ऊष्मा चालन का नियमन करने वाले आंशिक अवकलन समीकरणों की स्थापना की। इन समीकरणों को उन्होंने त्रिकोणमिती के फलनों की अनन्त श्रृंखला के उपयोग से हल किया। फोरियर इस विधी का उपयोग करने वाले पहले वैज्ञानिक थै। इन श्रृंखलाओं को फोरियर सीरीज के नाम से जाना जाता है। उन्होंने ठोस पिण्ड़ों में ऊष्मा के संचरण पर 1807 में शोध पत्र प्रस्त्त किया। प्रारम्भ में उनके कार्य पर आपत्तियां एवं कई विवाद उठाए गए एवं उसे प्रकाशित भी नहीं किया गया। लम्बे संघर्ष के बाद उनके इस शोध कार्य को प्रकाशित होने में 15 वर्ष लग गए थे। 1822 में फ्रांस की विज्ञान अकादमी ने उनके कार्य को दि ऐनेलाइटिक थ्योरी ऑफ हीट नामक प्स्तक में प्रकाशित किया। इस प्स्तक का अंग्रेजी में अनुवाद 56 वर्ष बाद 1856 में प्रकाशित हुआ। उनके कार्यों पर विवादों के बावजूद गणित और विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान ने अमिट छाप छोड़ी है। उनके कार्य का विकास गणित की एक शाखा-फोरियर विश्लेषण के रुप में हुआ जिसका उपयोग विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अपरिहार्य है। ऊष्मा और उसके गणितीय सिद्धांत के प्रति फोरियर को इतना जुनून था कि ऊष्मा उनके अंत का भी कारण बनी। फोरियर का मानना था कि अत्यधिक गर्म वातावरण उनकी सेहद के लिए अच्छा है। उनके मित्रों के अन्सार फोरियर ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में बीमारी के दौरान ख्द को इतने गर्म वातावरण में रखा कि वह गर्मी उनको मृत्यु की ओर तेजी से ले गई। अंततः 16 मई 1830 को फोरियर इस द्निया से चल बसे थे लेकिन गणित और विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। फोरियर उन 72 सम्माननीय लोगों में से हैं जिनके नाम फ्रांस की एफिल टॉवर पर खुदे ह्ए हैं।

दुल्हन की डोली

हम तो थे, अंधियारों के बादशाह, ये शमां किसने है जलायी, न कोई उम्मीद थी देखने की, मगर, चाह देखने की, ये किसने है जगाई! क्या बिसात थी हमारी, जो बसर करते, हम महफ़िल में तेरी, शूल, खंजर और तन्हाइयाँ, ही थीं हमारी जीवन में, हम तो चल दिए थे, इस जहाँ से, सोचकर, कि न हो आगाज, यहाँ दोबारा ! देखो ! अब तुम भी यारो, भटके हये इस राही को,

निरीक्षा वार्ष्णय, (विवाहिती जितेन्द्र कुमार)

अब मिल गया सहारा,
कितने शरमा के इस दर पे आज
मेरी दुल्हन की डोली आयी है,
स्वागत में जिसके,
चाँद-तारों की चाँदनी भी,
स्वयं धरा पर आयी है।
अरे, हम तो थे, अंधियारों के बादशाह,
ये शमां, आज किसने है जलायी है?

कार्यालयीन लेख

छुट्टी यात्रा रियायत (एलटीसी) से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ एवं सुझाव

- रणधीर क्मार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

कोलंबस कोलंबस छुट्टी है आई। चलो नया मुल्क मिलके ढूढ़ें मेरे भाई। ।

छुट्टी शब्द सुनते ही हमारी आँखों में चमक आ जाती है, जहन में एक नई स्फूर्ति एवं उर्जा का संचार होने लगता है। कभी तो हमारा मन अतीत में बिताये उन लम्हों को याद कर प्रफुल्लित हो उठता है तो कभी हम उन पर्यटन स्थलों के बारे में सोंचने लगते हैं जहाँ पर घूमने जाने की योजना हमने बनाई हो। इस भाग-दौड़ से भरी जिंदगी में कुछ समय निकालकर अपने मनपसंद की जगह पर सैर के लिए निकल जाना भला किसे नहीं अच्छा लगेगा?

भारत सरकार भी अपने कार्मिकों से यही अपेक्षा रखती है कि वे समय-समय पर अपने व्यस्तम दिनचर्या से परे भरपूर छुट्टी का आनंद ले तथा फिर दूगुनी उर्जा एवं उत्साह के साथ काम पर लौट आएँ। इससे हमारी कार्यदक्षता बढ़ती है तथा हमारे स्वास्थ्य पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसी उदेश्य से भारत सरकार अपने कार्मिकों एवं उनके आश्रितों के लिए छुट्टी यात्रा रियायत (एल. टी. सी.) की सुविधा देती है। सभी कार्मिक जो कि यात्रा प्रारंभ करने के दिन एक वर्ष की सेवा पूर्ण कर चुके हैं, इस सुविधा के पात्र होते हैं। वो कार्मिक जिन्होंने परिवीक्षा की अविध पूरी नहीं की है, वह भी इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं, परन्तु यदि वे अग्रिम लेना चाहते हैं तो उन्हें किसी स्थायी कार्मिक की जमानत देनी पड़ती है। सेवा निवृत्त हो रहें सरकारी कर्मचारी भी अपनी पात्रता के अनुसार एलटीसी सुविधा का लाभ ले सकते हैं परन्तु उन्हें वापसी यात्रा सेवा निवृत्त की तिथि से पहले पूरी करनी होगी। सेवा निवृत्ति के बाद एलटीसी की सुविधा नहीं मिलती है।

वर्तमान नियमों के अनुसार 2 साल के ब्लाक में, हम एक बार अपने गृह-स्थान तथा 4 साल के ब्लाक में एक बार भारत के किसी भी स्थल पर की यात्रा कर सकते हैं। एक ब्लाक में एलटीसी नहीं लेने की स्थिति में इसे अगले ब्लाक के प्रथम वर्ष में लिया जा सकता है। सरकारी कर्मचारियों को उनकी पात्रता के अनुसार हवाई/ रेल/ सड़क मार्ग द्वारा सीधे एवं लघुतम रास्ते से आने-जाने का कुल भाड़ा सरकार द्वारा वहन किया जाता है। प्रस्तावित यात्रा की तिथि से 65 दिन पूर्व हम अनुमानित राशि का 90% बतौर एलटीसी अग्रिम के रूप में ले सकते हैं तथा 10 दिनों के भीतर हमें अपने कार्यालय में टिकिट की प्रति देनी होती है।

यात्रा के सभी सेक्टरों में हमें मुख्यतः सरकारी/ सार्वजनिक/ लोक निकायों द्वारा संचालित वाहनों के प्रयोग की अनुमित होती है। केवल शारीरिक रूप से असक्षम लोगों, जो की सार्वजनिक वाहनों से यात्रा करने में असमर्थ हैं, को चिकित्सा प्रमाणपत्र एवं विभागाध्यक्ष के पूर्व अनुमित से निजी वाहन से यात्रा करने की इजाजत होती है तथा उन्हें पात्र श्रेणी के रेल किराया व वास्तविक खर्च, जो भी कम हो, की प्रतिपूर्ति की जाती है।

हवाई यात्रा के पात्र कार्मिकों को एयर-इंडिया के किफायती श्रेणी में LTC-80 किराया या उससे कम में यात्रा करने की अनुमित है। सभी स्थितियों में हवाई यात्रा के लिए टिकिट बुक करने के लिए हम एयर-इंडिया के काउंटर एवं उनके वेबसाइट तथा इस संबंध में प्राधिकृत एजेंसियों यथा बामर लॉरी, अशोक टूर एंड ट्रावेल्स, आई. आर. सी. टी. सी. से हीं कर सकते हैं। अन्य किसी भी एजेंसी से खरीदी गई टिकिटों के किराये की प्रतिपूर्ति नहीं होती है। एल. टी. सी के दौरान किसी भी तरह का पैकेज लेना मना है। केवल आई. टी. डी. सी. / एस. टी. डी. सी. / आई. आर. सी. टी. सी. के पैकेज लिए जा सकते हैं बशर्ते इन पैकजों के अंतर्गत केवल वास्तविक भाड़े की हीं प्रतिपूर्ति होती है। अतः सभी कार्मिकों को एलटीसी दावे के निरस्तीकरण से बचने के लिए इन प्रावधानों का खास ख्याल रखना जरुरी है।

अगर हमने अग्रिम राशि ली है तो हमें अपने एलटीसी बिल को वापसी यात्रा के समाप्ति के एक महीने के अंदर तथा अन्य स्थितियों में 3 महीनों के अंदर प्रशासन प्रभाग में जमा करना होता है। अगर हमने अग्रिम राशि ली है तथा एलटीसी बिल को एक महीने के बाद, परन्तु 3 महीनों से पहले जमा किया तो, पूरी अग्रिम राशि की वसूली की जाती है तथा बिल का भुगतान इस आधार पर किया जाता है जैसे कि आपने कोई अग्रिम नहीं ली हो। इस अविध के समाप्ति के बाद इन दावों पर कोई विचार नहीं किया जाता है।

सरकार द्वारा समय-समय पर एलटीसी नियमों में ढील दी जाती है। ऐसे कार्मिक जो कि हवाई यात्रा के पात्र नहीं हैं उन्हें भी देश के दुर्गम इलाकों यथा जम्मू-कश्मीर, अंडमान-निकोबार तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में भ्रमण के लिए हवाई सुविधा का लाभ देकर इन स्थलों पर एलटीसी लेने के लिए प्रोत्साहित लिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों को इन प्रदेशों के लोगों के खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, कला एवं संस्कृति से परिचित कराना तथा भारत की सामासिक संस्कृति की समझ को और मजबूती प्रदान करना है।

छठवें वेतन आयोग की संस्तुति के आधार पर जनवरी 01, 2006 के प्रभाव से पहली बार सरकारी सेवाओं के लिए नियुक्त कार्मिकों को पहले 4 साल के 2 ब्लाकों के दौरान, 4 साल के ब्लाक में 3 बार गृह-स्थान एवं चौथी बार भारत के किसी भी स्थान पर जाने की विशेष रियायत दी गई है। सभी कार्मिकों को एलटीसी के दौरान एक समय में अधिकतम 10 दिनों की अर्जित अवकाश का नगदीकरण एवं पूरे कार्यकाल के दौरान 60 दिनों की अर्जित अवकाश के नगदीकरण की अनुमति है। इस नगदीकरण को सेवानिवृत्ति के समय दिए जाने वाले अधिकतम 300 दिनों की अर्जित अवकाश नगदीकरण से अलग रखा गया है। इन नियमों को शिथिल कर एलटीसी के दौरान लिए गए नगदीकरण को उतनी हीं अविधे के छुट्टी लेने की अनिवार्यता को भी खत्म कर दिया गया है। उदाहरणस्वरुप, हम केवल एक दिन की आकस्मिक छुट्टी लेकर भी 10 दिनों के अर्जित अवकाश के नगदीकरण का लाभ उठा सकते है।

सरकारी कर्मचारियों को होने वाली असुविधा के मद्देनजर एवं वर्तमान सरकार की 'Maximum Governance, Minimum Government' की नीति के तहत एलटीसी संबंधित प्रावधानों का और भी सरलीकरण किया गया है। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के फरवरी 18, 2016 के कार्यालय ज्ञापन के अनुसार विभाग को कई संदर्भ मिले हैं जिसमे सरकारी कर्मचारियों द्वारा एलटीसी के आवेदन एवं भुगतान के समय काफी प्रावधानिक दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इनका कहना है कि कई बार सही प्रक्रिया के पालन न होने का मुख्य कारण इस नियमों/ आदेशों का सही समझ न होना है। विभाग के संज्ञान में यह भी आया है कि एलटीसी के दावों के निपटान में काफी लंबा वक्त लग जाता है, विशेषकर जब कर्मचारी एवं मंजूरी प्रदान करने वाले अधिकारी अलग-अलग शहरों में हों। अतः इन बाधाओं को दूर करने के उद्देश्य से विभाग द्वारा आवेदन एवं निपटान की प्रक्रिया को सरल बनाया गया है तथा इन प्रक्रियाओं को समयबद्ध तरीके से निपटाने की व्यवस्था की गई है। उपरोक्त कार्यालय ज्ञापन के अनुसार निम्नलिखित समय-सीमा का निर्धारण किया गया है।

क्र. सं.	कार्य विधि	समय सीमा
1.	छुट्टी की मंजूरी	5 कार्य दिवस + 3 कार्य दिवस*
2.	एलटीसी अग्रिम/ छुट्टी का नगदीकरण	5 कार्य दिवस + 3 कार्य दिवस*
3.	एलटीसी बिल के प्रस्तुत करने के बाद प्रशासन द्वारा इसके सत्यापन	10 कार्यदिवस+ 3 कार्य दिवस*
	में लगने वाला समय	
4.	आहरण एवं वितरण अधिकारी द्वारा लगने वाला समय	5 कार्य दिवस + 3 कार्य दिवस*
5.	वेतन एवं लेखा अधिकारी द्वारा लगने वाला समय	5 कार्य दिवस + 3 कार्य दिवस*

^{*} जब सरकारी कर्मचारी की तैनाती अपने मुख्यालय से दूर हों तब 3 अतिरिक्त दिवस दिया जा सकेगा। सरकारी कर्मचारी क्र. सं. 1 के बाद एल. टी. सी. पर जा सकेंगे। एल. टी. सी. आवेदनों/दावों के शीघ्रातिशीघ्र निस्तारण के लिए प्रयास किये जाएँ। अधिकतम समय-सीमा का कड़ाई से पालन हो तथा उल्लंघन के स्थिति में उपयुक्त स्पष्टीकरण मांगी जाय।

पृष्ठ 19 पर निरंतर. . . .

कृत्रिम उपग्रह और घर - कुछ साम्यताएँ

पुरुषोत्तम गुप्ता

वैज्ञानिक/ अभियंता, 'एसजी', संरचनात्मक प्रणालियाँ प्रभाग

कृत्रिम उपग्रहों में कई प्रकार की जटिल प्रणालियाँ विद्यमान होती हैं। इन प्रणालियों को हमारे घरों और उनमें लगी प्रणालियों के माध्यम से संक्षेप में समझा जा सकता है।

1. डिज़ाइन - घरों के निर्माण से पूर्व, नक्शा बनाते वक्त इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उपलब्ध जमीन पर अधिक से अधिक उपयोगी घर बन सके। उपग्रह का आयतन व द्रव्यमान भी प्रक्षेपण यान द्वारा निर्धारित किया जाता है। डिज़ाइन के द्वारा, इस दिए हुए आयतन और द्रव्यमान में अधिक से अधिक उपकरणों को अंतरिक्ष में ले जाने का प्रयास किया जाता है।

पुष्ठ 18 से निरंतर....

एलटीसी.....

मौजदा प्रावधानों के अंतर्गत एल.टी.सी. पर जाने से पहले सरकारी कर्मचारियों को अपने नियंत्रण अधिकारी को सूचित करना पड़ता है किन्तु अब नये प्रावधानों के तहत कार्मिकों को स्वतः-प्रमाणपत्र अपने छुट्टी मंजूर करने वाले अधिकारी को देना ही पर्याप्त होगा। इसके साथ जब कोई सरकारी कर्मचारी एल.टी.सी. आवेदन देता है तो उसे संबंधित दिशा-निर्देशों की एक प्रति उपलब्ध कराई जायेगी। कार्मिकों को गंतव्य स्थान से संबंधित यादगार अनुभवों एवं चित्रों को भी उपयुक्त मंच पर साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अतः उपरोक्त विवेचनों से यह विदित होता है कि सरकारी कार्मिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा समय-समय पर छुट्टी यात्रा रियायत के नियमों में आवश्यक बदलाव लाए जाते रहे हैं। प्रशासन भी इन नियमों/ दिशा-निर्देशों के पालन हेतु हर संभव प्रयास करता है। एल.टी.सी. पर जाने के इच्छुक सभी कार्मिकों से मेरा निवेदन है कि इन निर्देशों का पालन कर बेहतर एवं समयबद्ध सेवा प्रदान करने में सहयोग दें।

- 2. निर्माण आजकल भवनों की दीवारों में खोखली ईंटों का उपयोग हो रहा है। इसके दो लाभ हैं 1) भवन वज़न में हलका और मज़बूत होता है और 2) इसके आंतरिक तापमान पर बाहरी तापमान का असर कम होता है। इसी प्रकार कृत्रिम उपग्रहों की दीवारें भी एल्युमिनियम के खोखले छत्तों को कार्बन रेशा प्रबलित प्लास्टिक (सी. एफ. आर. पी.) की पिट्टिकाओं के बीच रखकर बनाई जातीं है। इसे एल्युमिनियम और सी. एफ. आर. पी. की सैंडविच संरचना कहते हैं। यह पदार्थ मज़बूत होने के साथ-साथ, अंतरिक्ष में होने वाले तापीय परिवर्तन से अपना आकार अन्य पदार्थों की तुलना में बहुत कम बदलता है।
- 3. नीतभार उपग्रह में स्थित उपकरणों को नीतभार कहते हैं। इनकी तुलना घर के निवासियों से की जा सकती है। जिस प्रकार मनुष्य की कार्य-क्षमता तापमान के अधिक परिवर्तन से कम होती है, अथवा अत्यधिक शीत या उष्णता में अस्तित्व भी ख़तरे में पड़ जाता है उसी प्रकार इन उपकरणों की क्षमता पर अंतिरक्ष के न्यूनाधिक तापमान का प्रभाव पड़ता है। तापमान को नियंत्रण में रखने के लिये कई उपाय किए जाते हैं। इनमें से कुछ उपाय, उपग्रह को उष्मारोधी चादरों द्वारा ढँकना, हीटरों और उष्मा नली का उपयोग, सौर परावर्तक, तापीय विलेपन आदि हैं।

4. ईंधन की टंकियाँ -

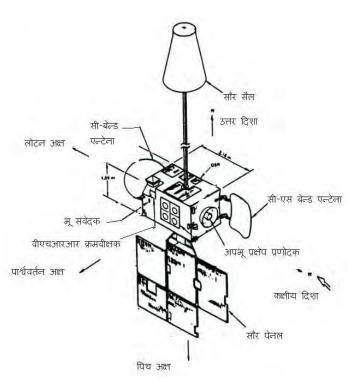
ईंधन की टंकी हमारे घरों की व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग होती है। कृत्रिम उपग्रहों में कई जटिल प्रणालियों के साथ साथ ईंधन की टंकियाँ भी होती हैं, हालांकि इनमें अलग प्रकार का ईंधन होता है।

अंतरिक्ष में उपग्रह की दिशा और पथ में बदलाव आते रहते हैं।

धन्यवाद।

इन्हें नियंत्रण में रखने के लिए नोदन प्रणाली लगाई जाती हैं। ईंधन की टंकी द्वारा नोदन प्रणाली को ईंधन की आपूर्ति की जाती है। यह प्रणाली एक राकेट इंजिन की भांति कार्य करती है। ईंधन की टंकी टाइटेनियम मिश्र धातु से बनी होती है। अधिक जीवन काल के लिए डिज़ाइन किए जाने वाले उपग्रह में ईंधन की मात्रा भी अधिक होती है। कृत्रिम उपग्रहों के कार्यकाल समाप्त होने का एक कारण ईंधन का समाप्त होना भी है।

- 5. सौर फलक (पैनल) सौर फलकों का कार्य सौर उर्जा को विद्युत उर्जा में परिवर्तित कर उसे उपग्रह के विभिन्न उपकरणों को प्रदान करना है। एक बड़े और अधिक उपकरणों वाले उपग्रह के लिये बड़े सौर फलकों की आवश्यकता होती है।
- 6. बैटिरियाँ बैटरी का कार्य उर्जा को संग्रहित करना और उसे आकस्मिक परिस्थिति में या बिजली की आपूर्ति बाधित होने की स्थिति में उपयोग करना है। उपग्रह और सूर्य के मध्य में चन्द्रमा या पृथ्वी के आ जाने से उपग्रह पर ग्रहण काल होता है। इस परिस्थिति में सौर फलकों द्वारा उपग्रह के उपकरणों को बिजली की आपूर्ति बाधित होती है, अतः उपग्रह में बैटरियों का उपयोग किया जाता है।
- 7. **छातानुमा व समतल एन्टेना** उपग्रह द्वारा भू-स्थित एन्टेना से आँकड़ों का आदान-प्रदान, रेडियो तरंगों के माध्यम से होता है। इस हेतु उपग्रह पर छातानुमा व समतल एन्टेना लगे होते हैं। इन्हें सामान्यतः एल्युमिनियम



और सी. एफ. आर. पी., सैंडविच पदार्थ से निर्मित किया जाता है, ताकि ये अंतरिक्ष में होने वाले तापीय परिवर्तन से अपना आकार सुरक्षित रख सकें।

8. दिशा संवेदक - टी. वी. या इन्टरनेट के संकेत सही न मिलने पर घरों में लगे एन्टेना की दिशा ठीक करना आवश्यक हो जाता है। उपग्रह स्थित एन्टेना की दिशा ठीक करने के लिए दिशा संवेदक, ईंधन की टंकी और उपग्रह स्थित मोटरों का उपयोग किया जाता है। उपग्रह स्व-स्थित एन्टेना के द्वारा पृथ्वी के संपर्क में रहता है। उपग्रह पृथ्वी के संपर्क में रहता है। उपग्रह पृथ्वी के संपर्क में रहे इसके लिए जरुरी है कि इसकी दिशा में बदलाव न्यूनतम हो। इस बदलाव का पता लगाने के लिए उपग्रह में दिशा संवेदक लगे होते हैं। ये संवेदक पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र, सूर्य व तारों की स्थित के आधार पर उपग्रह की दिशा की जानकारी देते हैं। इस जानकारी के आधार पर पृथ्वी से संकेत भेजकर

उपग्रह की दिशा ठीक की जाती है।

अंतरिक्ष में स्थित भारतीय उपग्रह इन्सैट-1 का चित्र*

*नीलमणी मोहन्ती (एडिटर) , अवर ट्रीस्ट विथ स्पेस, अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, इसरो, अहमदाबाद से साभार

मेरा खोया हुआ सामान

जो छूट गया है,

उसे कहूँ कुछ
या बहुत कुछ !
शायद ये गुम हुई, लुप्त हुई
चीजें केवल मेरी ही थीं,
या कहूँ मेरी भी थीं।

कभी मिलेगी वापस, शायद नहीं, या नहीं पता। जो गया सो गया, उसकी नहीं अब फिक्र, पर कर लें उनका जिक्र. . .

सबसे पहले गया मेरा ईमान, पता नहीं कब और कहाँ ? काफी जद्दोजहद के बाद, आयी मन से आवाज़, अरे, हो गया था वह तो अप्रासंगिक, खोने का कहाँ होता आभास ?

फिर कुछ समय बाद, हुआ मुझे महसूस, अब तो आत्मसम्मान भी रहा है डोल, लड़खड़ाता हुआ ये, कब मेरा छोड़ गया ये साथ, मुझे नहीं अब याद, पर हाँ, शायद खो जाने की एक महसूस हुयी थी टीस।

जिंदगी की इस भाग-दौड़ में, हासिल करता गया नए मुकाम, चढ़ता रहा नित सीढ़ियाँ दर सीढ़ियाँ, तभी सकरे से एक मोड़ पर, करने लगा आत्म चिंतन, अपनी इन लुप्त होतीं, साथ छोड़तीं, बेजान सी, व्यर्थ सी, चीजों के लिए . . .

तभी मन ने कहा, अरे पागल, अरे पागल, जितेन्द्र कुमार, वैज्ञा. /अभि. ऐसी गैर जरूरी चीजों का, गुम हो जाना ही बेहतर है।

देश-प्रेम को लुप्त हुये,
एक अरसा हो चला था,
एहसास तो हुआ तब,
जब देखा इसका विकृत
रूप,
भारत-पाक क्रिकेट मैच में,
जनता के सैलाब में।

रविवार की सुबह,
निहार रहा था आइना,
उड़ गए मेरे होश,
देखकर चेहरा अपना,
कि मेरे बाल पकने लगे थे,
और विश्वास डगमगा रहा
था।
समझाया मन को मैंने,
रे मूर्ख, यही सब तो है
सफलता और वैभव,

माफ करना मेरे साथियों, छूटी हुईं, गुम हुईं, कुछ चीजों का, मात्र जिक्र ही कर पाया, वैसे इन्हें कहाँ तक और गिनाऊँ,

तू पछता रहा है व्यर्थ . .

जिन्हें मैं स्वयं ही भुलाने में लगा हूँ।

पिछले दिनों एक सच्चे मित्र ने, कई बार समझाया, सुख, शांति और संतुलन अगर तुझे है बनाना, तो ऐसी गैर-जरूरी, अर्थहीन, निरथर्क, व्यर्थ-सी, चीजों को तुझे अवश्य ही, पड़ेगा इन्हें भुलाना।

अन्वादक

- सोनू जैन, हिंदी अधिकारी हर शख्स में बैठा है एक अनुवादक भाषा के नए चमत्कारों का सर्जक जो कभी दिल की खुशी को ओठों की मुस्कुराहट में अनूदित करता है।

> कहीं अंदर बैठी वेदनाओं को आंसुओं का रूप देता है। कभी अदृश्य और सूक्ष्म विचारों को मूर्त एवं स्थूल शब्दों में पिरोता है।

परिजनों से किसी एक भाषा में दोस्तों से दूसरी भाषा में गैरों से तीसरी भाषा में कार्यक्षेत्र में चौथी भाषा में और कहां-कहां न जाने कितनी भाषाओं में प्रेम-समर्थन-विरोध आदि भावों को रंग देता है।

कुछ सीखने के लिए नई भाषा पर रीझता है कुछ सिखाने के लिए नई भाषा में भीगता है आजीवन चलता है भाषाओं का व्यापार जिससे आता है सभ्यताओं में निखार।

सच है, भाषा के बिना ज्ञान का प्रसार न होता और अनुवाद के बिना उसका विस्तार न होता अंदर बैठे उस फनकार को आओ हम भी जगाएं अनुवाद कर नए शब्दों में निज भाव सजाएं।

> उम्र के इस पड़ाव पर, खो चुका मैं, इतना कुछ, पर उम्मीद आपसे है, मेरी खोयी ये चीजें, सद्भाव, प्रेम, ईमान, नैतिकता और विश्वास शायद हों भी आपके पास, पर इन प्यारी-सी चीजों को, आप रखना सदैव अपने पास।

पुस्तक समीक्षा

मेलुहा के मृत्युंजय

सोमा करनावट

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, हिंदी अनुभाग

कॉमर्स और हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त। लेखन में, विशेष रूप से जिंदगी की छोटी-मोटी घटनाओं से जुड़ी कहानियाँ लिखने में रूचि। "चिकन सूप फॉर सोल" में कहानी प्रकाशित। अन्य कई पत्रिकाओं, अखबारों में भी कहानी, विचार आदि प्रकाशित।

कुछ समय पूर्व अमीश त्रिपाठी की "मेलुहा के मृत्युंजय" उपन्यास पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यह पुस्तक 'शिव रचना त्रय' की तीन पुस्तकों में प्रथम है। बहुत ही रोचक और रोमांचक विषय पर लिखा यह उपन्यास हमारे मन में बसी धार्मिकता को नए सिरे से परिभाषित करता है। उपन्यास का मुख्य बिंदु यह है कि शिव, अर्थात महादेव, जो भारतवर्ष में अनादि देव के रूप में पूजे जाते हैं, क्या होता अगर वे कोई भगवान न होकर आपकी और हमारी तरह केवल एक मनुष्य होते?

इस कहानी के अनुसार, शिव तिब्बत के एक साधारण कबीले के मुखिया हैं। पड़ोसी कबीलों से हो रहे निरंतर युद्ध की विभीषिका से अपने कबीले को बचाने के लिए शिव मेलूहा-निवासी नंदी के साथ उसके राज्य मेलुहा चले जाते हैं। उसके बाद जो घटनाएँ घटित होती हैं, उसमें शिव अपने विवेक और कर्म से जो रास्ता अपनाते हैं, उससे शिव पहले नीलकंठ, फिर महादेव और उसके बाद भगवान रुद्र (बुराई का संहार करने वाले भगवान) के रूप में प्रसिद्ध होते हैं। इन सबमें शिव को मेलुहा की प्रानी किंवदंतियों का भी सहयोग मिलता है।

आज हम अपने आसपास का माहौल देखते हैं, तो लगता है कि किसी भी धार्मिक किंवदंती के बारे में लिखना आसान नहीं है, थोड़ी सी भी चूक हो जाए तो लेखक पर अधर्मी होने या धर्म को बदनाम करने का आरोप लग सकता है। लेकिन अमीश ने पूरी कहानी लिखते समय यह ध्यान रखा है कि शिव को मनुष्य बताना किसी के विश्वास को ठेस न पहुँचाए और कहानी के मुख्य बिंदु के साथ न्याय भी हो।

शिव के अलावा कहानी का जो पात्र सबसे ज्यादा प्रभावित करता है वो है पर्वतेश्वर - मेलुहा का सेनापित। भगवान राम में विशुद्ध आस्था रखनेवाले और उनके बताए नियमों से कभी न डिगने वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित पर्वतेश्वर भारतवर्ष का सबसे कुशल सेनापित है। वह पहले शिव को इसलिए महादेव नहीं मानता क्योंकि शिव के नियम भगवान राम के नियमों से अलग हैं, लेकिन शिव के कमों से प्रभावित होकर वह भी शिव में आस्था रखने लगता है।

इस उपन्यास में अमीश ने भारत में विकर्म की अवधारणा पर प्रहार किया है। सती मेलुहा की राजकुमारी है, लेकिन विकर्म है। ऐसा माना जाता था कि पिछले जन्म के किन्हीं पापों के कारण इस जन्म में उसका पित और बच्चा मर गया। उसे समाज में छुआछूत का सामना करना पड़ता है। शिव सती से शादी तो करते ही हैं, साथ ही समस्त विकर्म समाज के लिए आवाज उठाते हैं और उन्हें बराबर का स्थान दिलाने के लिए मेलुहा के पुराने नियमों में परिवर्तन भी करते हैं।

इस कहानी में सरस्वती नदी का पानी एक विशेष पेय - सोमरस बनाने के काम आता है, जिसे पीने से मन्ष्य लंबे समय तक स्वस्थ जीवन जीता है। मेल्हा के सभी लोग सोमरस पीते हैं। इसी कारण उपन्यास का नाम अभिव्यक्ति, अंक-10 2016

"मेलुहा के मृत्युंजय" रखा गया। इस सोमरस को बनाने में सरस्वती का पानी अत्यधिक मात्रा में प्रयोग होता है जिससे नदी सूखने लगती है। मनुष्य किस प्रकार अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करता है, इसका भी मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

इस उपन्यास में एक और क्रांतिकारी विचार पर बल दिया गया है - अपने साथ दूसरे समाज के लोगों और जीवन-शैलियों के प्रति सम्मान की भावना रखना। शिव मेलुहा के सूर्यवंशियों के साथ मिलकर चंद्रवंशियों के विरूद्ध युद्ध करते हैं। सूर्यवंशी (पुस्तक के अनुसार देवताओं का प्रतीक) मानते हैं कि चंद्रवंशियों (पुस्तक के अनुसार असुरों का प्रतीक) की जीवनशैली निंदनीय है और वे उन्हें जीतकर, उनकी जीवनशैली बदलकर उनका उद्धार करना चाहते हैं। लेकिन युद्ध जीतने के बाद शिव देखते हैं कि दोनों जीवनशैलियाँ अलग भले ही हों, निंदनीय कोई भी नहीं है। दोनों में कुछ अच्छाई है और कुछ बुराई भी है।

इसी तरह की कई सामाजिक बुराइयों और कुरीतियों पर प्रहार करती, कई प्राचीन कहानियों को बिलकुल नए रूप में प्रस्तुत करती "मेलुहा के मृत्युंजय" पाठकों को शुरू से आखिर तक बांधे रखती है। लेखक अमीश त्रिपाठी इस अनूठे प्रयास के लिए सराहना के पात्र हैं।

पेड़ों की छाया

भूपेन्द्र जैन

(विवाहिती सोमा करनावट)

ऊँची इमारतें, शानदार ऑफिस और पक्के मकान घूमने को हैं गाड़ियाँ, खाने को पूरे 56 पकवान। पहले पंखा, फिर कूलर, अब है ए. सी. घर में आया कुछ नदारद है यहाँ, तो वो है बस - पेडों की छाया।

कांक्रीट का जंगल है, इंटरनेट का जाल वाह रे इंसान, तूने तो कर दिया कमाल। प्रकृति का दम निकाल बेसुध कर दिया तूने और दिखा रहा जगत को अपनी प्रगति की मशाल।

लकड़ी काटी, तेल निकाला, निदयाँ तूने सुखाई और इन्हें बेच-बेच कर दौलत खूब कमाई। इन शहरों को बसाने में उजड़ गया है कहीं गाँव सब मिलता है यहाँ, नहीं मिलती है तो बस - पेड़ों की छाँव।

मौसम को चुनौती देते ग्लोबल वार्मिंग की ललकार सुनो अपने चारों ओर वातावरण में फैला हाहाकार सुनो। मत उजाड़ो पक्षियों का घर, उनको यहाँ चहकने दो फल, सब्जियाँ उगने दो, फूलों को भी महकने दो।

पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ, धरती माँ का ऋण चुकाओ खुद भी समझो इस बात को, औरों को भी समझाओ। वरना जब तुम सोचोगे कि क्या खोया हमने, क्या पाया सब कुछ होगा वहाँ, नहीं होगी तो बस - पेड़ों की छाया।

कर्तव्य या अधिकारः सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिपेक्ष्य

अमित त्रिपाठी, वैज्ञानिक/ अभियंता- एससी

मित्रो! प्रायः यह पाया जाता है कि एक व्यक्ति के रूप में हमें अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों (घर-परिवार वाले, सहकर्मी आदि) से कई सारी अपेक्षाएं एवं शिकायतें रहती हैं। हम सोचते हैं कि अमुक व्यक्ति को अमुक-अमुक कार्य करने चाहिए और अमुक तरीके से करने चाहिए। हमारे दैनिक जीवन की ये शिकायतें हमारे अंदर असंतुष्टि व कुण्ठा पैदा करती हैं। हमारी यह कुण्ठा हमें संगठनों व उनकी व्यवस्थाओं (घरेलू, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व वैश्विक आदि) की प्रासंगिकता, उनके अस्तित्व और उनके प्रति निष्ठा के बारे में सोचने पर विवश करती है। परन्तु अपनी व्यक्तिगत व सामाजिक निर्भरता के कारण इन व्यवस्थाओं व संगठनों को हम न तो पूरी तरह नकार पाते हैं और न ही स्वीकार।

हमारी इस संशयात्मक मनोदशा का लाभ उठाकर कुछ व्यक्ति अथवा संगठन हमारे अधिकारों के हिमायती बनकर, हमें व्यवस्थाओं से द्रोह के लिये उकसाते रहते हैं। प्रथमदृष्टिया ऐसे व्यक्ति अथवा संगठन हमें अपने हितैषी मालूम होते हैं किन्तु हम भूल जाते हैं कि सूक्ष्म आणविक कणों से लेकर बड़े-बड़े ग्रह आदि तक कुछ नियमों के अनुरूप एक निर्धारित ब्रह्माण्डीय व्यवस्था के अंतर्गत गतिशील हैं। सूक्ष्म से लेकर विराट तक सभी के लिए सह-अस्तित्व मूलक व्यवस्थाओं के अंतर्गत गतिशील रहना अनिवार्य है। हर व्यवस्था में कुछ गुण व दोष होते ही हैं परन्तु बिना किसी व्यवस्था के अराजकता फैलती है। सह-अस्तित्व मूलक ब्रह्माण्डीय व्यवस्था के नियम न केवल व्यवस्था के सुचारू नियमन को सुनिश्चित करते हैं। अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड व इसकी प्रत्येक इकाई के एक निश्चित दिशा में प्रसार व विकास को भी सुनिश्चित करते हैं।

नई व्यवस्थाओं का निर्माण तभी किया जाना चाहिये, जब पुरानी को सुधारने का विकल्प शेष न हो और पुरानी व्यवस्था को तभी प्रतिस्थापित किया जा सकता है, जब नई व्यवस्था का भली प्रकार परीक्षण कर लिया गया हो। हमें यह याद रखना चाहिये कि 'जो सुधार कर सकते हैं, वे शिकायतें नहीं रखते और जो सुधार नहीं कर सकते, उन्हें शिकायतें रखने का अधिकार नहीं'।

जो नई व्यवस्था देना चाहते हों उन्हें इसका कारण, इसकी प्रासंगिकता व इसके नियमों का निर्धारण करने से पहले पुरानी व्यवस्था में स्वयं के अस्तित्व, स्वयं की प्रासंगिकता, स्वयं के सम्पादित व गैर-सम्पादित कर्तव्यों का भली प्रकार विश्लेषण कर लेना चाहिये। जिसने व्यक्ति के रूप में स्वयं के कर्तव्यों को ठीक प्रकार से नहीं समझा, वह संगठनों का निर्माण व संचालन करने का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। कर्तव्यों को करने से अधिकार मिलते हैं। किसी भी व्यवस्था में जो एक का कर्तव्य है वही दूसरे का अधिकार है।

विडम्बना यह है कि बहुत कम व्यक्ति या संगठन ही ऐसे हैं जो हमें हमारे कर्तव्यों के बारे में जागरूक करते हों, शेष सभी तो हमें हमारे अधिकारों के नाम पर व्यवस्थाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये उकसाते रहते हैं। अंततः ऐसे व्यक्ति या संगठन कानूनों का एक मकड़जाल तैयार करवाने की कोशिश करते हैं। वे भूल जाते हैं कि जीवन की स्वतंत्रता सबके हित के लिये उठी अंतःप्रेरणा से कार्य करने में है, दण्डों/ कानूनों द्वारा नियमों का पालन करवाने में नहीं। कानूनों के मकड़जाल में दम घुटने पर यही व्यक्ति/ संगठन फिर से इन्हें खत्म करवाने के लिये आंदोलन करने लगते हैं।

अभिव्यक्ति, अंक-10 2016

कर्तव्यों का पालन हमें एक इकाई के रूप में संगठनों व व्यवस्थाओं में रहने का अधिकार देता है जबिक कर्तव्यों को किये बिना अधिकारों की माँग एक ओर अनुचित है वहीं दूसरी ओर संगठनों को नष्ट करने का काम भी करती है। परस्पर कर्तव्यों को करने से मैत्री-प्रेम बढ़ता है जबिक परस्पर अधिकारों को माँगने से कटुता बढ़ती है। कर्तव्यों का पालन सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को निजी मैत्री सम्बन्धों से लेकर विश्व-बंधुत्व के रूप में परिलक्षित करता है।

बंधुत्व कर्तव्यों के पालन का सामाजिक परिणाम है। परस्पर कर्तव्यों को करने से संगठन मजबूत होते हैं व बाहरी संगठनों पर आर्थिक-सामाजिक व राजनैतिक निर्भरता कम होती जाती है। वहीं दूसरी ओर बिना कर्तव्यों को किये परस्पर अधिकारों की माँग करने से हमारे संगठन (घर/ परिवार/ समाज/ राष्ट्र/ विश्व) आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक रूप से बिखरते चले जाते हैं और उनकी मौलिक इकाई होने के कारण हम सभी आर्थिक, भावनात्मक, सामाजिक व राजनैतिक रूप से कमजोर व परावलम्बी होते चले जाते हैं।

हमें यह याद रखना चाहिये कि मौलिक इकाई होने के कारण, हम हमारे संगठनों के अभिन्न अवयव हैं। हमारी कमजोरी/ मजबूती संगठनों की कमजोरी/ मजबूती संगठनों की कमजोरी/ मजबूती हमारी स्वयं की कमजोरी/ मजबूती है। महापुरूषों के जीवन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जो कर्तव्यों व सुधार कार्य करने में व्यस्त हैं उनके पास अधिकारों को माँगने की समस्या नहीं आती और यदि आती भी है तो उन्होंने ऐसा समझा कि व्यक्ति विशेष के अधिकारों के बलिदान से यदि संगठन सुरक्षित रहता है तो यही सबके लिये हितकारी है।

हमें यह समझना चाहिए कि मनुष्य को 'चुनाव' करने की जो स्वतंत्रता मिली हुयी है, वह एक शाश्वत व्यवस्था के अंतर्गत निर्धारित कर्तव्य व कर्मों को निर्धारित विधियों से करने के लिए है। स्वैच्छिक व अराजक व्यवहार केवल पीड़ा और पतन ही पैदा कर सकता है।

कवि की व्यथा

आशिष सोनी- 'आश'

किव को भी हर रोज कमाने जाना पड़ता है. . . शब्दों की तरह उसे भी इधर-उधर जाना पड़ता है। किवता से ही भले ही पूरी दुनिया में आग लगा दे, पर चूल्हा जलाने के लिये, धूप में तपना ही पड़ता है। भावनाओं को अभिव्यक्त करने, करता है नई रचनाएँ, पर एहसास जताने के लिये, उसे भी छूना ही पड़ता है। सूरज, चाँद, बादल और सितारें तो खेलते है उसकी गोद में, पर बच्चों के साथ बच्चा बनके खेलना ही पड़ता है। मिलन हो या विरह, प्रेमिका की हर ख्वाहिशें पूरी करता है,

पर खुद के सपने पूरे करने को दिन-रात तड़पता है।
गरीब की रोटी हो या चाहे अमीरों की महफिल में हो,
जाने कितनी ही बातों के लिये उसका भी दिल मचलता है।
किसी भी विषय पर सुनाता है अपने दिल की गहराई से,
पर यहाँ इस संसार में उसकी ख़ामोशी कौन पढ़ पाता है?
'आश' को समझ तो है दुनिया भर की, कि सब मुमकिन नहीं,
फिर भी हर रोज उसके मासूम दिल को समझाना पड़ता है।
सच कहता हूँ, हरी नोटों से ही तो चलती है सबकी दुनिया,
एक किव ही है जिसको सिर्फ वाह-वाह से चलाना पड़ता है।

इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम - मांडू

साधना करनावट

(सोमा करनावट की माता जी)

घूमने-िफरने के शौकीन लोगों के लिए मांडू सचमुच एक बढ़िया सैरगाह है। गुजरात की सीमा से लगभग 150 कि. मी. दूर मध्यप्रदेश में स्थित मांडू इतिहास प्रेमी पर्यटकों के लिए तो अनूठा स्थान है ही, पर आम पर्यटक भी यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर और यहाँ के शासक रहे बाज बहादुर और रानी रूपमती के प्रेम की कहानियाँ सुनकर आनंदित होते हैं।

<u>जुबानी इतिहास</u>

मांडू के बारे में कहा जाता है कि किसी समय वहाँ जैनों की बड़ी बस्ती थी और सभी लोग बहुत धनवान थे। अगर बाहर का कोई जैन परिवार वहाँ बसना चाहता था, तो स्थानीय निवासी उसे एक ईंट, एक बाँस और एक रुपया देकर अपने बराबरी का बना देते थे।

इतिहास

मांडू का नाम 14वीं शताब्दी से सामने आता है। यहाँ परमार राजाओं, मुस्लिम सुलतानों और फिर मराठा सरदारों ने राज किया था। मांडू पर राज करने वाले राजाओं ने समय-समय पर यहाँ कई इमारतें बनाईं। काल के थपेड़ों ने इन भवनों पर काफी असर डाला, फिर भी बीते युग की कहानी सुनाने वाली बहुत-सी चीजें अब भी मौजूद हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक खुले मांडू की सैर एक दिन में करनी हो तो नीचे बताए स्थान जरूर देख लेने चाहिए:

होशंगशाह का मकबरा

इसे भारत में संगमरमर (मार्बल) से निर्मित सबसे पुराना स्मारक माना जाता है। इसे देखकर ही शाहजहाँ को ताजमहल बनाने की प्रेरणा मिली थी। उसने चार वास्तुविदों (आर्किटेक्टस) को इसे देखने भेजा था। इनमें से एक उस्ताद हामिद था, जिसका ताजमहल बनाने में बड़ा योगदान था।

हिंडोला महल

इस इमारत की पार्श्व की दीवारें ढलवाँ होने से यह हिंडोले (झूले) की तरह दिखाई देती है, इसलिए इसका नाम ही हिंडोला महल पड़ गया। यह मांडू के अन्य सभी भवनों से अलग है। वैसे यह एक सभागार था। अंग्रेजी वर्णमाला के 'T' अक्षर जैसी यह इमारत एकदम सादी पर मजबूत है। शायद इसका उपयोग दरबार-ए-खास की तरह किया जाता था। इसके आस-पास भी देखने लायक कई स्मारक हैं।

जहाज महल

इंसान बड़ी अनूठी कल्पनाएँ करता है। जब ये साकार हो जाती हैं तो न जाने कितने समय तक देखने वालों को मुग्ध करती रहती हैं। मांडू का जहाज महल भी इसी तरह की एक इमारत है। यह दो तालाबों के बीच बना हुआ है और बिल्कुल ऐसा लगता है मानो कोई जहाज लंगर डाले खड़ा हो।

बाज बहादुर और रूपमती के महल

मांडू की हवा में रची-बसी है रूपमती और बाजबहादुर के प्रगाढ़ प्रेम की कहानियाँ। इनके महलों का दीदार करते हुए पर्यटक भी मानो उसी युग में पहुँच जाते हैं और प्रेम की दंतकथाओं में से एक कथा के नायक-नायिका की कल्पना में खो जाते हैं।

जामा मस्जिद

जिस जमाने में संचार के आज की तरह के साधन नहीं थे, तब भी दुनिया में न सिर्फ खबरें बिल्क प्रेरणाएँ भी एक जगह से दूसरी जगह पहुँचती थीं। इसी का प्रमाण है मांडू की जामा मस्जिद, जो दिमिश्क की उम्यद मस्जिद की तरह बनाई गई है। मस्जिद की जालियाँ और गुंबद बहुत ही आकर्षक हैं। आवाज गुंजाने के लिए और आवाज की टकराहट (प्रतिध्विन) रोकने के लिए यहाँ की गई व्यवस्था से पता चलता है कि उस समय के लोग निर्माण-कला में कितने माहिर थे।

इनके अलावा भी कई छोटे-बड़े स्मारक और अवशेष मांडू में देखने को मिलते हैं। लगता है मानो यहाँ का हर पत्थर एक नहीं अनेक कहानियों को अपने में समेटे है और अपनी कहानी सुनाने को बेताब है। बस कोई सुनने वाला चाहिए। और हाँ, मांडू में एक ईको-पॉइंट भी है। यहाँ से आप जो भी आवाज लगाएँगे, वह अनुगुंजित होकर आपको सुनाई देगी। यह पॉइंट देखना नहीं भूलना चाहिए।

अगर आप भी मांडू जाने का इरादा कर रहे हों और मांडू में ही रुकना चाहते हों तो मध्य प्रदेश सरकार के विश्राम गृह में पहले से ही बुकिंग करा लेना चाहिए। नहीं तो जिला मुख्यालय धार के किसी होटल में रुका जा सकता है, जहाँ से मांडू सिर्फ 35 किलोमीटर दूर है। मध्य प्रदेश के प्रमुख नगर इंदौर से यह लगभग 100 कि. मी. की दूरी पर है तो 'आपण् अम्दाबाद' से करीब 350 किलोमीटर।

भजन

अश्वनी कुमार गुप्ता, वैज्ञा. / अभि.

मैं पक्षी पंख बिनु कैसे उड़ कर आऊँ। दूर बसायो गाँव अपनो, क्या दिल की फरियाद सुनाऊँ। पास आवन की चाहन मोरी पंख नहीं रह-रह फरफराऊँ बिजुरी चमके बादर बरसे

पता नहीं क्या भेजूँ संदेशवा लिखूं पतिया फिर देत मिटाऊँ आप ही मितवा जतन करो कऊँ मैं बैठी अकेली नीर बहाऊँ।

लंबी सफर क्यों न घबराऊँ।

(1)

अंग-अंग भये शिथिल स्वामी पाथर बनो ना पुकार लगाऊँ 'अश्वनी' के बस आस तुम्हारी दामन तोसे कभी ना छुडाऊँ। तेरी कृपा प्रसादी पाये मन अब हुआ बैरागी नाच गान मोहे फीकी लागे सबही को हम त्यागी।

जिन उर भीतर लागी लगनिया ते नर हुए बड़भागी चमक-धमक सों प्रीति नाहीं सादगी में मन जागी।

शीश चरनन माहि धर भये मन क्रम वचन अनुरागी विषयन में मन धावत नाही प्रभु संग लगनी लागी।

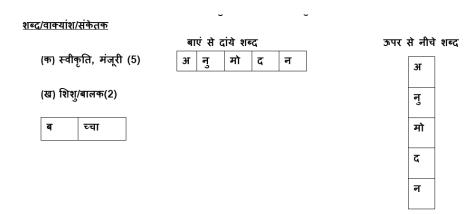
दुई कर जोरी शीश नवाये धीर सो बिनती मांगी अबकी बेर पार करो प्रभु तेरे चाहत के हम रागी।

हिंदी वर्ग पहेली

- रणधीर कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

वर्ग-पहेली को भरने के लिए नियम/ निर्देश:

- (i) वर्ग पहेली में सफ़ेद वर्गों को भरा जाना है.
- (ii) वर्ग पहेली के शब्दों का अनुमान या संकेत देने वाले शब्द या वाक्यांश (संकेतक) दो प्रकार का हैं बाएं से दांये और ऊपर से नीचे. संकेतक के बाद कोष्टक में शब्द का अक्षरों की संख्या दी गई है. तीन अक्षरों के शब्द के लिए कोष्ठक में (3) लिखा होगा. 2-3 या 3-2 के जोड़े वाले शब्दों के लिए शब्द संकेतक के साथ कोष्ठक में (2,3) अथवा (3,2) लिखा जायेगा.
- (iii) उन वर्गों के क्रमानुसार अंको का उल्लेख किया गया है जहाँ से कोई शब्द शुरू होगा. यही अंक सभी संकेतों से पहले दिए गए हैं.
- (iv) वर्ग पहेली में शब्दों को वर्गों में लिखने के कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं.



संकेत : बाएं से दांये ()

- 1. सर्वोच्च असैनिक सम्मान (3, 2)
- 2. संविधान की सूची जिसमे भाषाओं का उल्लेख (3)
- 3. परिज्ञापी रोकेटों की शृंखला (3)
- 4. मेघदूत के रचियता (4)
- 5. राज्य सभा का पदेन अध्यक्ष (2,4)
- 7. ऑध्रप्रदेश की नई राजधानी (5)
- 10. देश के खिलाफ अपराध (2, 2)
- 11. शताब्दी से तेज चलने वाली प्रस्तावित रेलगाड़ी (4)
- 12. Honorarium का हिंदी शब्द (4)
- 13. सब क्छ जानने वाला (3)
- 14. इसरो द्वारा प्रस्तावित प्रथम सौर वेधशाला (3)
- 15. अहमदाबाद के समीप स्थित पक्षी अभयारण्य (2, 4)
- 18. संविधान का आईना (4)
- 19. नवीनतम सर्वे के अन्सार सबसे स्वच्छ शहर (3)

- 33. जिसका पता न चल सके (3)
- 34. हवाई अपहरण पर आधारित नवीनतम फिल्म
- **(**3)
- 35. देश जो भारत को ब्लेट ट्रेन में मदद करेगा (3)
- 36. आँख/ चक्ष् (3)

ऊपर से नीचे () ↓

- 6. एयरफोर्स स्टेशन जहाँ हालिया आतंकी हमला (5)
- 8. जनमानस की नई पेंशन योजना (3)
- 9. घर/ आवास (3)
- 16. महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
- (2)
- 17. रस से भरा ह्आ (3)
- 21. Gazetted का हिंदी शब्द (5)

अभिव्यक्ति, अंक-10 2016

- 20. नोबेल विजेता श्री कैलाशसत्यार्थी की संस्था (4, 3, 4)
- 22. राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित त्रेमासिक पत्रिका (4, 3)
- 27. कमल का समानार्थी शब्द (3)
- 28. वायु/ पवन (3)
- 29. शहर, जहाँ हाल में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मलेन संपन्न ह्आ (3)
- 31. ऊँचे क्ल में पैदा होने वाला (3)
- 32. बिना टिकट का पत्र (3)

- 23. नाश्ता/ अल्पाहार (4)
- 24. सेवानिवृत कार्मिकों के ज्ञान का योगदान सॉफ्टवेयर (4)
- 25. इसरों का Augmented Reality Apps (3)
- 26. खग/ पक्षी (3)
- 30. नई हिंदी प्रशिक्षण योजना (4)
- 37. ऑनलाइन हिंदी शिक्षण प्रणाली (2)
- 38. उपग्रह आधारित नौवहन प्रणाली (3)
- 39. धन का देवता (3)

1						2			3		
4				5	6						
7,8	9							10			
		11		12					13		
		14				15				16	17
	18						19				
20											
21, 22	23								24	25	26
27			28			29	30				
			31, 39	37		32					38
				33							
		34		35					36		

..... उत्तर अगले अंक में

मंगलयान की मंगल यात्रा

हिरण वारडे, वरिष्ठ सहायक

नमस्कार।

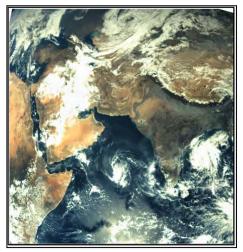
में हूँ हिंद का नन्हा सा बेटा- नाम है मंगलयान। चलो मैं ले चलूँ आपको मेरी जीवन-यात्रा पर।

भारत-माता की धरती पर मेरा विकास हुआ। देखो वहाँ मेरी आँखें बनीं, जिसे लोग मंगल रंगीन कैमरा (MCC) कहते हैं, देखो मेरी नाक जिसे मंगल मिथेन संवेदक (MSM), मेरा दृष्टिपटल जिसे लोग तापीय अवरक्त वर्णक्रममापी (TIS) कहते हैं, मेरे हाथ जिसे मंगल बहिर्मंडल उदासीन संरचना विश्लेषक (MENCA) कहते हैं। मेरे शरीर का हर भाग संकलित हुआ तथा मैं संपूर्ण बना। मेरा प्रक्षेपण श्रीहरिकोटा से होने पर माँ की प्रसव-पीड़ा समाप्त हुई तथा सब हर्ष से चिल्ला उठे एवं एक दूसरे के गले लगने लगे।

मैं अपने पथ पर चल पडा। लोग कहते थे मेरे जन्म के बाद मैं अपनी माँ का चेहरा देख पाऊँगा, परंतु भारत माँ की जो तसवीरें मुझे दिखाई गई थी वैसा कुछ मुझे नज़र नहीं आया। यहाँ से कोई सीमाएँ नहीं दिखती। सिर्फ हिमालय की लंबी कतार व पैरो में समुद्र के पानी से बनी रेखा के अलावा कुछ



दिखाई नहीं दिया। मैं घबरा गया। अधिक उचाँईयों पर जाने के बाद तो अपना पराया कुछ नहीं रहता, इस तरह मेरे लिए पूरा विश्व मेरी माँ बन गया। उससे ऊपर जाने पर मैं अपनी माँ के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा था। जैसे छोटा बच्चा अपनी माँ का आँचल पकड़कर घूमता रहता है। पर मैं धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था, अब मुझे माँ से दूर जाना था। मुझे अच्छा नहीं लग रहा था पर यही नियति थी। यही मेरे लिए निर्धारित हुआ था।



थोड़ी दूर जाते ही रास्ते में चंदा-मामा मिले। उन्होंने कहा एक दो पल ठहर तो जा। पर ठहरना प्रकृति का स्वभाव नहीं। बस उनसे मिले दो-चार बातें की। मामा से मिल कर माँ जैसा लगा। मन को शांति का अनुभव हुआ और आगे चल दिए। अब मेरी गति तेज हो गई और जल्दी से मैं अपने निर्धारित कार्य स्थल पर पहुँचने वाला था। परंतु इस तेज गति से मुझे डर लग रहा था। मैं मन ही मन माँ को पुकार रहा था। तभी मुझे जैसे माँ से सिग्नल मिला और कहते हैं ना कि माँ का आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ रहता है वैसे माँ की उस अलौकिक ऊर्जा से उनके सिग्नल से मेरी गति नियंत्रित हुई एवं मैं धीरे-धीरे मंगल के वातावरण में प्रवेश कर गया। यहाँ चंदा मामा की तरह फोबोस और डीमोस अंकल मिले। वे भी बड़े मज़ेदार थे पर

समय के अभाव के कारण मैं उनको हाय-हेलो कर के आगे बढ़ लिया। बहुत धीरे से मैंने मंगल पर अपने पैर जमाये। अब मुझे वह काम करना था जिसके लिए मेरा जन्म हुआ था।

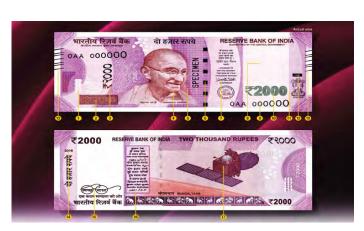


मंगल पर पानी की उपस्थिति की खोज के लिए मैं धीरे धीरे सतह पर चला। थोडी मुश्किलें हो रही थीं क्योंकि यहाँ की धरती ऊबड़-खाबड़ है। मैं थोड़ा लड़खड़ाया पर माँ ने पूरा कंट्रोल बनाये रखा था। मैंने अपने नन्हें हाथों से मिट्टी का ढेला उठाया तथा उसका केमिकल परीक्षण करने लगा, उसमें H₂O की उपस्थिति की रिपोर्ट जब माँ को मिली, माँ हर्षोल्लासित होकर नाचने लगी। पूरी दुनिया में मेरी तथा भारत-माता की चर्चाएं होने लगी। तब पता चला कि पूरी दुनिया एक भी और अनेक भी है। सारा संसार - सारा ब्रह्मांड एक भी है पर सब अलग भी हैं। जो अंदर है वह बाहर है। तब पता चला कि भारत माँ भी इस तरह विश्व से अलग न होते हुए उसकी अपनी एक अलग पहचान है- अलग अस्तित्व है। बस हम जितना ऊँचाई प्राप्त करेंगे, सारा ब्रह्मांड सारा विश्व एक होने लगता है।

मंगलयान अब सबके हाथ:

जैसे बचपन में माता-पिता के नाम से बच्चे जाने जाते है, बाद में बच्चों के नाम कमाने पर उनके नाम से माता-पिता जाने जाते है। मेरे नाम से माता का नाम रोशन हुआ और मेरी तसवीर अब माता के हर बेटे-बेटी के हाथ में है। यह देख मेरी आँखों में आँसू आ गए।

मेरे छोटे भाई मंगलयान-2 की शुभ व सुखद यात्रा की प्रार्थना। नन्हे के आने की राह देखता आपका चहेता - मंगलयान।



(यह कहानी मंगलयान की यात्रा को मनोरंजक रूप में प्रस्तुत करने के लिए है। यह वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित नहीं है।)

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट के संयुक्त तत्त्वावधान में 21 जुलाई 2016 को संपन्न हिंदी तकनीकी संगोष्ठी 2016

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद में दिनांक 21 जुलाई 2016 को "भारतीय अतंरिक्ष कार्यक्रम में मेक-इन-इंडिया अभिगम" विषय पर हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साथ ही "मेक-इन-इंडिया की सफलता में राजभाषा की भूमिका" विषय पर राजभाषा सत्र भी शामिल किया गया। तकनीकी और राजभाषा सत्रों के लिए कुल 50 लेख प्राप्त हुए जिन्हें मौखिक और पोस्टर रूप में प्रस्तुत किया गया।



संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के पूर्व सभी प्रतिभागियों एवं समिति सदस्यों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस पहल की सभी ने प्रशंसा की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ख्यात लेखक एवं राजभाषा कर्मी डॉ. दामोदर खड़से थे। उद्घाटन सत्र में मंच पर निदेशक, सैक श्री तपन मिश्रा, सह-निदेशक, सैक श्री डी. के. दास, नियंत्रक श्री डी. आर. पटेल, संगोष्ठी आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री राजीव ज्योति और विरष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत मंच पर आसीन थे। मुख्य अतिथि डॉ. दामोदर खड़से ने अपने भाषण/ उद्बोधन में हिंदी में कार्य करने की महत्ता पर बल दिया। उद्घाटन समारोह में संगोष्ठी के लेख-संग्रह की पुस्तक और सीडी का विमोचन किया गया।





संगोष्ठी को 5 सत्रों में विभाजित किया गया था। कुछ लेख पोस्टर के माध्यम से भी प्रस्तुत किए गए। सबसे पहले राजभाषा सत्र में राजभाषा हिंदी से संबंधित लेख प्रस्तुत किए गए। लेख प्रस्तुति के उपरांत श्रोताओं ने लेख से संबंधित प्रश्न भी पूछे, जिनके लेख प्रस्तुताओं ने यथोचित उत्तर दिए।

उद्घाटन सत्र के उपरांत राजभाषा सत्र रखा गया जिसकी अध्यक्षता श्री अशोक कुमार बिल्लूरे, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने की और संचालन श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी ने की। अभिव्यक्ति, अंक -10 2016

तकनीकी सत्रों की श्रृंखला में "सत्र-1 संचार उपग्रह" की अध्यक्षता श्री एच. आर. कंसारा ने की तथा सत्र संचालन श्री देवाग मांकड़ ने किया। "सत्र-2 सुदूर संवेदन" की अध्यक्षता श्री बी. एस. गोहिल ने की तथा सत्र संचालन श्रीमती सुनंदा त्रिवेदी ने किया। "सत्र-3 अंतरिक्ष आधारित वैज्ञानिक एवं सामाजिक अनुप्रयोग" की अध्यक्षता श्री विरेन्दर कुमार ने की तथा सत्र संचालन डॉ. संभवनाथ त्रिवेदी ने किया, "सत्र-4 गुणवत्ता एवं तकनीकी प्रक्रियाएं तथा प्रौद्योगिकीगत विकास प्रक्रियाएं- भाग-1" की अध्यक्षता श्री आर. एम. परमार ने की तथा सत्र संचालन श्री दिनेश अग्रवाल ने किया। "सत्र-5 गुणवत्ता एवं तकनीकी प्रक्रियाएं तथा प्रौद्योगिकीगत विकास प्रक्रियाएं- भाग-2" की अध्यक्षता श्री डी. आर. पटेल ने की तथा सत्र संचालन श्री सी. एन. लाल ने किया। "सत्र-6 नाविक" की अध्यक्षता श्री के. एस. परिख ने की तथा सत्र संचालन श्री आशीष सोनी ने किया। पोस्टर सत्र के समन्वयक श्री डी. के. सिंह और सदस्य श्री बी. एस. मुंजाल और श्री आर. एस. शर्मा थे।



सभी सत्रों में लेखकों ने अपने प्रस्तुतीकरण पावरपाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से दिए और प्रस्तुति के उपरांत श्रोताओं द्वारा प्रश्न पूछे गए। सत्र संचालकों के द्वारा सुगमता से सभी सत्रों का संचालन किया गया। कुछ आलेख पोस्टर प्रस्तुतीकरण के लिए चुने गए थे जिन्हें विक्रम हॉल दीर्घा में प्रदर्शन हेतु रखा गया और आगंतुकों को उनकी विषय-वस्तु से भी अवगत कराया गया।





संगोष्ठी के अंत में सह निदेशक श्री डी. के. दास की अध्यक्षता में पैनल चर्चा रखी गई जिसमें सभी सन्नाध्यक्षों ने अपने संबंधित सन्नों की संक्षिप्त समीक्षा और अपने विचार रखे। अंत में प्रमाण-पन्न वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री डी. के. दास, सह-निदेशक, श्री राजीव ज्योति, अध्यक्ष, संगोष्ठी आयोजन समिति, श्री विरेन्दर कुमार, निदेशक-डेकू तथा श्री डी. आर. पटेल, नियंत्रक द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण-पन्न वितरित किए गए। श्री सोनू जैन, हिंदी अनुवादक, सैक ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

राजभाषा कार्यशालाएं

08 मार्च 2016 को प्रभाग प्रधान और समकक्ष अधिकारियों के लिए राजभाषा कार्यशाला

सैक/ डेक् में कार्यरत वैयक्तिक सचिव एवं वैयक्तिक सहायकों के लिए 08 मार्च 2016 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री आर. एम. परमार, उपनिदेशक-सेडा दास ने की। उद्घाटन सत्र में श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी ने कार्यशाला की उपयोगिता और महत्व पर प्रकाश डाला।





पहला सत्र वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत ने लिया जिसमें उन्होंने तिमाही रिपोर्ट भरने तथा वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत राजभाषा संबंधी लक्ष्यों आदि के विषय में जानकारी दी। उन्होंने अधिक-से-अधिक कार्य हिंदी में करने का अनुरोध किया। दूसरा सत्र श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी ने लिया जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने तथा टिप्पण एवं आलेखन तथा अंतरिक्ष विभाग के निर्देशानुसार विविध प्रोत्साहन योजनाओं के विषय में जानकारी दी। तृतीय सत्र में श्री सोनू जैन, हिंदी अनुवादक ने कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा सिक्रिय करने के लिए यूनिकोड एक्टिवेशन पर चर्चा की और प्रायोगिक रूप से अभ्यास कराया। कार्याशाला में सैक में कार्यरत सभी वैयक्तिक सचिव तथा वैयक्तिक सहायक वर्ग के कर्मचारियों ने भाग लिया।

20 जून 2016 को प्रभाग प्रधान और समकक्ष अधिकारियों के लिए राजभाषा कार्यशाला

सैक/ डेक् के प्रभाग प्रधान वर्ग के अधिकारियों के लिए 20 जून 2016 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सैक के सह-निदेशक श्री डी. के. दास ने की। श्री डी. के. दास ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी को हमें अपने दैनंदिन कामकाज में अपनाना चाहिए और हिंदी में कार्य करने पर सरकार अपने कर्मचारियों को प्रोत्साहन स्वरूप अनेक प्रस्कार प्रदान करती है।





अभिव्यक्ति, अंक -10

उद्घाटन सत्र में श्री बी. आर. राजपूत, विरष्ठ हिंदी अधिकारी ने कार्यशाला की उपयोगिता और महत्व पर प्रकाश डाला और चाय के उपरांत पहले सत्र में श्री बी. आर. राजपूत ने राजभाषा नीति के संवैधानिक प्रावधान, वार्षिक कार्यक्रम, तिमाही रिपोर्ट आदि के विषय में जानकारी दी। उन्होंने अधिक-से-अधिक कार्य हिंदी में करने तथा अपने अधीनस्थ स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि जब उच्च अधिकारी स्वयं हिंदी में टिप्पणी लिखेंगे, हस्ताक्षर करेंगे तो अधीनस्थ कर्मचारी स्वतः प्रेरित होंगे और हिंदी में कामकाज बढ़ेगा। दूसरा सत्र श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी ने लिया जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने तथा टिप्पण एवं आलेखन तथा अंतरिक्ष विभाग के निर्देशानुसार विविध प्रोत्साहन योजनाओं के विषय में जानकारी दी। तृतीय सत्र में श्री सोनू जैन, हिंदी अनुवादक ने कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा सक्रिय करने के लिए यूनिकोड एक्टिवेशन पर चर्चा की और प्रायोगिक रूप से अभ्यास कराया।

19 सितंबर 2016 वैज्ञानिक/ तकनीकी/ पुस्तकालय सहायक वर्ग के लिए राजभाषा कार्यशाला

19 सितंबर 2016 को वैज्ञानिक सहायक, तकनीकी सहायक और पुस्तकालय सहायक वर्ग के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री एच. आर. कंसारा, उप निदेशक, मेसा ने की और मुख्य अभिभाषक के रूप में श्री बी. आर. राजपूत, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) रहे। श्री कंसारा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला और कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का संकल्प दोहराया।



श्री राजपूत ने तिमाही कार्यशालाओं के महत्व बल दिया और श्रीमती नीलू सेठ, विरष्ठ हिंदी अधिकारी, सैक ने सैक में राजभाषा कार्यन्वयन से संबंधित गतिविधियों से प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए सभी प्रतिभागियों से राजभाषा कार्यशाला का अधिक से अधिक लाभ लेकर अपने दैनंदिन कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने का अनुरोध किया।

इसमें 75 कर्मचारी उपस्थित रहे। पहला सत्र श्री बी. आर. राजपूत ने लिया जिसमें उन्होंने राजभाषा नीति के संवैधानिक प्रावधानों, वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों, आदि के विषय में जानकारी दी। दूसरा सत्र श्रीमती नीलू सेठ, विरष्ठ हिंदी अधिकारी ने लिया जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने तथा टिप्पण एवं आलेखन तथा अंतरिक्ष विभाग के निर्देशानुसार विविध प्रोत्साहन योजनाओं के विषय में जानकारी दी। तृतीय सत्र में श्री सोनू जैन, हिंदी अनुवादक ने कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा सिक्रय करने के लिए यूनिकोड एक्टिवेशन पर चर्चा की और प्रायोगिक रूप से अभ्यास कराया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) गतिविधियाँ

सैक में नराकास सदस्य कार्यालयों के लिए काव्यपाठ प्रतियोगिता संपन्न

निदेशक, सैक के अनुमोदन से 13 मई 2016 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (इसरो), अहमदाबाद के परिसर में हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ के लिए श्री तपन मिश्रा, निदेशक, सैक और श्री विरेन्दर कुमार, निदेशक, डेकू स्वयं उपस्थित थे। निदेशक, सैक, निदेशक, डेकू, श्री बी. एस. मुंजाल, अध्यक्ष, हिंदी काव्यपाठ समिति, श्री बी. आर. राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, श्री आशीष सोनी, सदस्य सचिव, हिंदी काव्यपाठ समिति द्वारा दीप प्रज्जवित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। निदेशक, सैक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि कि सरकारी कर्मचारी मात्र अपने कार्य के प्रति ही समर्पित नहीं हैं अपितु उनमें सृजनात्मकता भी कूट-कूटकर भरी है। श्री विरेन्दर कुमार, निदेशक, डेकू ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए केंद्र की हिंदी अधिकारी श्रीमती नीलू सेठ, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मार्गनिर्देशन में अथक प्रयास करते हैं। प्रतियोगिता के प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सफल आयोजन हेतु उन्होंने सभी को शुभकामनाएँ दीं।





इस कार्यक्रम में नराकास अहमदाबाद के विविध सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों द्वारा 44 कविताएँ प्रस्तुत की गई। इन कविताओं के संकलन का विमोचन निदेशक, सैक के कर-कमलों से किया गया, इसका संपादन श्री आशिष सोनी ने किया। प्रतियोगिता के दौरान प्रस्तुत कविताएँ विविध विषयों से संबंधित थीं। किसी ने बचपन तो किसी ने माँ पर कविता प्रस्तुत की। इसरों के चंद्रयान, मंगल मिशन एवं नाविक (भारतीय उपग्रह मंडल में नौवहन) पर भी कविताएँ प्रस्तुत कीं। प्रतियोगिता के मध्य में चाय के विराम से पूर्व डेकू द्वारा आईआरएनएसएस पर तैयार किया गया वृत्त चित्र सभी प्रतिभागियों को दिखाया गया। इस वृत्तचित्र को देखकर सभी काफी प्रभावित हुए। उन्होंने देखा कि नाविक किस प्रकार कार्य करेगा और कैसे यह भारतीय उपग्रह मंडल को विविध सेवाओं में सहयोग प्रदान करेगा। प्रतियोगिता के संचालन में समिति ने अथक परिश्रम दर्शाते हुए सभी कवियों को प्रस्तुति हेतु आमंत्रित किया।





कवियों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक कविता से संबंधित पोस्टर एवं कविता का शीर्षक, कवि का नाम, संबंधित कार्यालय का नाम आदि विवरण मंच पर स्क्रीन पर प्रदर्शित किए जा रहे थे। सभी प्रतिभागियों द्वारा इस प्रयास को काफी सराहा गया। विविध कवियों द्वारा स्तरीय कविताएँ प्रस्तुत की गईं। सभी कविताएँ रोचक एवं रसप्रद थीं, जिन्होंने श्रोताओं को बांधे रखा। अभिव्यक्ति, अंक -10

सैक द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद की 68वीं बैठक का सफल आयोजन

26 जुलाई 2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री बलवीर सिंह, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, गुजरात ने की। सैक की ओर से सह-निदेशक श्री डी. के. दास, श्री राजीव ज्योति, उप-निदेशक, एमआरएसए तथा वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत भी मंच पर आसीन थे। राजभाषा विभाग की ओर से डॉ. सुनीता यादव, उप-निदेशक कार्यान्वयन भी मंच पर आसीन रहीं। बैठक में विरेन्दर कुमार, निदेशक डेकू भी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री दिनेश अग्रवाल ने सैक और डेकू की वैज्ञानिक एवं तकनीकी गतिविधियों पर पावर-पाइन्ट प्रस्तुति दी। साथ ही डेकू द्वारा निर्मित हिंदी वृत्त-चित्र भारत का स्पेस पोर्ट का प्रदर्शन किया गया, जिसकी उपस्थित अधिकारियों ने खूब सराहना की।



इसमें अहमदाबाद के केंद्रीय सरकार / सार्वजिनक उपक्रमों के लगभग 145 कार्यालयों की उपस्थिति रही। बैठक में हिंदी कार्यान्वयन के विविध पुरस्कारों का वितरण भी किया गया। वर्ष 2015-16 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन तथा सैक परिसर में नराकास बैठक की मेजबानी के लिए सैक को नराकास अहमदाबाद की ओर से चल वैजयंती प्रदान की गई। यह चल वैजयंती सैक के सह-िनदेशक श्री डी. के. दास तथा विरष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी. आर. राजपूत ने श्री बलवीर सिंह, अध्यक्ष नराकास/ प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात के कर-कमलों से ग्रहण की। वर्ष 2015-16 के दौरान 100 से कम स्टाफ सदस्यों वाले केंद्रीय सरकार के कार्यालय की श्रेणी में विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेकू) को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार डेकू निदेशक श्री विरेन्दर कुमार ने श्री बलवीर सिंह, अध्यक्ष नराकास/ प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात के कर-कमलों से ग्रहण किया। श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी को भी प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिहन प्रदान किया गया।

हिंदी माह 2016 की रिपोर्ट

अंतिरक्ष उपयोग केंद्र और विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेक्) में दिनांक 1 सितंबर से 30 सितंबर 2016 तक हिंदी माह का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कर रहे निदेशक सैक, श्री तपन मिश्रा द्वारा सैक की नई वेबसाइट व्योम के हिंदी संस्करण का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर श्री डी. के. दास, सह निदेशक, सैक तथा श्रीमती नीलू सेठ, विरष्ठ हिंदी अधिकारी, सैक भी मंच पर उपस्थित रहीं। इस वर्ष हिंदी माह के उद्घाटन समारोह को नया रूप देते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में नाटिका, नृत्य और गीत प्रस्तुत किए गए। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने इस प्रयास की सराहना की।









सैक पुस्तकालय द्वारा हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। पूरे माह पुस्तकालय में पिछले वर्ष के दौरान खरीदी गई पुस्तकों को प्रदर्शन हेतु रखा गया तथा हिंदी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया।





14 सितंबर, 2016 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. विपुल कपूर ने स्वस्थ जीवन शैली विषय पर व्याख्यान दिया। सभी श्रोताओं ने व्याख्यान को बहुत पसंद किया और दी गई जानकारी बहुत उपयोगी बताया। व्याख्यान के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया था जिसमें श्रोताओं ने अपने प्रश्न पूछे और डॉ. कपूर ने समाधान बताए।





माह के दौरान हिंदी और हिंदीतर भाषा वर्गों के लिए 14 अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस वर्ष वार्तालाप प्रतियोगिता, अंताक्षरी प्रतियोगिता और वाचन प्रतियोगिता अपने अनूठेपन की वजह से सबके आकर्षण का केंद्र रहीं। वाहन चालक और कुक, गार्डनर आदि स्टाफ सदस्यों के लिए सरल लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों के लिए भी 5 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए अंताक्षरी प्रतियोगिता और आश्रित बच्चों के लिए सुलेखन, श्रुतलेखन, आश्रुभाषण और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।









दिनांक 30 सितंबर 2016 को हिंदी माह पुरस्कार/ प्रमाणपत्र वितरण कार्यक्रम रखा आयोजित किया गया। निदेशक, सैक और नियंत्रक, सैक ने हिंदी माह के विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उत्साहवर्धन किया। आभार ज्ञापन श्री सोनू जैन, हिंदी अनुवादक द्वारा प्रस्तुत किया गया।

सितंबर 2016 के दौरान संपन्न हिंदी माह में आयोजित हिंदी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों की सूची

1 0.10	विजता प्रातमागिया का सूचा				
1.काव्यपाठ प्रतियोगिता	C. C	1_			
हिंदीतर भाषा वर्ग	हिंदी भाषा वर्ग	पुरस्कार			
आशीष सोनी	अवि व्यास	प्रथम			
देवांग माकंड़	नितिन उपाध्याय	द्वितीय			
शेरिन जॉन्सन	संजय कुमार कसोदनिया	तृतीय			
वैशाली उमराणिया	अमित शुक्ला	प्रोत्साहन			
भावेश प्रजापत	राहुल गुप्ता	प्रोत्साहन			
इन्द्रनील मिश्रा	मन विनायक	प्रोत्साहन			
अमिता मेवाडा	विभूति भूषण झा	प्रोत्साहन			
2.शब्दज्ञान प्रतियोगिता		·			
प्रतीक जैन	सुगंध मिश्रा	प्रथम			
कृष्णा मकाणी	सत्यप्रिय मित्तल	द्वितीय			
अर्चना भट्ट	रणधीर कुमार	तृतीय			
श्वेता किरकिरे	राहुल गुप्ता	प्रोत्साहन			
गीता एन. पटेल	जितेन्द्र कुमार	प्रोत्साहन			
अमिय बिश्वास	संगीत कुमार मिश्रा	प्रोत्साहन			
आशीष सोनी	नरेन्द्र कुमार	प्रोत्साहन			
नम्रता जे पटेल	प्रणव कुमार पाण्डेय	प्रोत्साहन			
नीलम बैंकर	सुनील सिंह कुशवाहा	प्रोत्साहन			
3.वार्तालाप प्रतियोगिता		·			
आशिष सोनी	राहुल निगम				
प्रतीक जैन	विभूति भूषण झा	प्रथम			
डॉ. के. आर. मुरली	विकास अग्रवाल	-0-0-			
अमिय बिश्वास	नवीन भूषण	द्वितीय			
जैमिन शाह	विशाल अग्रवाल				
एम. जी. परमार	राहुल गुप्ता	नृतीय			
बंकिम शाह	डॉ. आभा छाबड़ा				
देवांग मांकड	डॉ. एस. पी. व्यास	प्रोत्साहन			
	I				

हेतल के. पंड्या	अखिलेश शर्मा	प्रोत्साहन				
गीता पटेल	रंजन परनामी	- आस्साहण				
अर्चना भट्ट	संजय कसोदनिया	प्रोत्साहन				
क्षितिज पंडया	सचिदानंद	– प्रात्साहन				
क्रिष्णा मकाणी	विवेक कुमार सिंह					
चंपा ठक्कर	कमलेश बराया	प्रोत्साहन				
4. शुतलेखन प्रतियोगिता		-				
प्रतीक जैन	कमलेश बराया	प्रथम				
अर्चना दीपक भट्ट	कृष्ण मोहन	द्वितीय				
अपूर्व प्रजापति	राहुल जैन	तृतीय				
अमिय विश्वास	शिखा गुप्ता	प्रोत्साहन				
कृष्णा मकाणी	राहुल गुप्ता	प्रोत्साहन				
नम्रता पटेल	दिनेश अग्रवाल	प्रोत्साहन				
यज्ञेश पटेल	ईश्वर प्रजापति	प्रोत्साहन				
एस. एल. उपाध्याय	पंकज श्रीवास्तव	प्रोत्साहन				
बंकिम शाह	सत्यप्रिय मित्तल	प्रोत्साहन				
5. टिप्पण आलेखन व अनुवाद प्रतियोगिता						
आदित्य कुमार पतिंगे	पूजा कक्कड़	प्रथम				
रिद्धि एन. शाह	मन विनायक शुक्ल	द्वितीय				
उर्वी पोपट	भास्कर तिवारी	तृतीय				
अपूर्व प्रजापति	आनंद कुमार	प्रोत्साहन				
प्रतीक अ. जैन	अखिलेश शर्मा	प्रोत्साहन				
विनोद एम. पटेल	चंद्र प्रकाश सिंह	प्रोत्साहन				
आशिष सोनी	अभिनव क्षितिज	प्रोत्साहन				
	अवनीश जैन	प्रोत्साहन				
	प्रणव कुमार पांडेय	प्रोत्साहन				
6.कहानी लेखन प्रतियोगिता		•				
कृष्णा एस. मकाणी	रंजन परनामी	प्रथम				
आदित्यकुमार पतिंगे	अखिलेश शर्मा	द्वितीय				
अपूर्व प्रजापति	कमलेश कुमार बराया	तृतीय				
पल्लवी वी श्रीधर	जितेंद्र कुमार	प्रोत्साहन				
गीता एन पटेल	तनु सिंह	प्रोत्साहन				
देवांग मांकड़	धर्मेन्द्र सिंह तोमर	प्रोत्साहन				
t						

प्रतीक जैन	राहुल गुप्ता	प्रोत्साहन			
7. निबंध लेखन प्रतियोगिता					
जितेन्द्र खर्डे	रंजन परनामी	प्रथम			
समीर साखरे	शुभांक शर्मा	द्वितीय			
सुनील महेन्द्रकुमार चौहाण	श्वेता अग्निहोत्री	तृतीय			
आशिष सोनी	अमित त्रिपाठी	प्रोत्साहन			
अपूर्व प्रजापति	अभिषेक शुक्ला	प्रोत्साहन			
एस. एल. उपाध्याय	अमित शुक्ला	प्रोत्साहन			
आदित्यकुमार पतिंगे	अनिल कुमार	प्रोत्साहन			
8. अंताक्षरी प्रतियोगिता					
पल्लवी श्रीधर, धर्मेंद्र सिंह तोमर, शेख वसीमअहमद	, जयरव जनसारी, पुनीत सिंघवी	प्रथम			
विशाल अग्रवाल, अखिलेश शर्मा, सुगंध मिश्रा, भानु	पंजवानी, श्वेता अग्निहोत्री	द्वितीय			
प्रीति राजपूत, सी पी सिंह, राहुल निगम, डी राम रर	जक, विभूति भूषण झा	तृतीय			
गौरव सेठ, प्रमोद शर्मा, सुमित्रा बेहरा साहू, सुनीला	मिश्रा, अमित शुक्ला	प्रोत्साहन			
शिवानी भार्गव, ऐश्वर्या अहलूवालिया, निक्की श्रीवास	तव, रति सिंह, ज्योत्सना लाडकानी	प्रोत्साहन			
आशीष डावरा, नीलम बैंकर, मोनिका सूद, सत्यप्रिय	मित्तल, अमित कुमार गुप्ता	प्रोत्साहन			
दिलीप जे भट्ट, वेंकटरमन पी, पंकज तांबूलकर, कृष्प	गा मकाणी, सचिन कुमार मौर्य	प्रोत्साहन			
सतीश प्रसाद, शताद्रु भट्टाचार्य, निखिल लेले, क्षितिज	श्रोतागण				
9. पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता					
अमिय बिश्वास	डी राम रजक	प्रथम			
आनंद पाठक	नीरू जयसवाल	द्वितीय			
आदित्य पतिंगे	रंजन परनामी	तृतीय			
जगदीशन मुदलियार	सर्वेश्वर प्रसाद व्यास	प्रोत्साहन			
तातय्या पुष्पाला	कमलेश कुमार मीणा	प्रोत्साहन			
	आरती जोशी	प्रोत्साहन			
	जितेन्द्र कुमार	प्रोत्साहन			
10. सुलेखन प्रतियोगिता					
वाहन चालक वर्ग	कुक, गार्डनर आदि	पुरस्कार			
नागेश पी परमार	मनीष अमृतलाल राठोइ	प्रथम			
प्रहलाद सिंह आडा	निकुंज डी दवे	द्वितीय			
मनोहर चावडा	यशपालसिंह एम. सिसोदिया	तृतीय			
आर टी दवे	दीपक एन परमार प्रोत्साहन				
ਤੇ ए च पटेल	शिरीष बाब् घरडे	प्रोत्साहन			

		सचिन सैनी					प्रोत्साहन		
		अनिल कुमार आर परमार					प्रोत्साहन		
			अतुल कुमार एन. गोहिल					प्रोत्साहन	
			राजेश कुमार शर्मा				प्रोत्साहन		
11. टंकण प्रतियोगिता			,				पुरस्कार		
प्रथम पुरस्कार	द्वितीय	य पुरस्कार	तृतीय पु	रस्कार		प्रोत्साहन			
मोहम्मद अज़हर आलम	अमिय ी	बिश्वास	प्रतिक उ	जैन	ऋषि जुनेजा			वेद प्रकाश	
		रं		रंज	जन परनामी			आशिष सोनी	
					अपूर्व प्रजाप		गति		शिखा गुप्ता
12. हिन्दी प्रश्नमंच			•	•					
प्रथम			द्वितीय तृती			य			
1. रोहित त्यागी		1. रंजन परनामी			1. संजय कुमार कसोदनिया		गर कसोदनिया		
2. भरत देसाई		2. राघव मेह			2. मो. अउ		अजह	र आर सैयद	
			प्रोत्साहन						
जलश्री देसाई	जयदीप कैन्तुरा		निवेदिता गौर पर		परीक्षि	परीक्षित पराशर			
सौरभ कुमार जैन	कौशल मिस्त्री		सुनील मटई जये		जयेश	येश जयराजन			
हिरेन जयंतीभाई परमार	चिराग बाधवा		राजेश कोहली '		बिजीव एन वी				
राजीव परम	पीयूष सिन्हा	सेन्हा अमिय		स	फोगट शौकीन				
श्रोतागण									
आशा शर्मा	कृणाल परीर	व सत्यप्रि	प्रेय मित्तल अखिलेश शर्मा शताद्रु भट्टाचार		वार्य				
विकास सिंह	आशीष जैन	अमिता	ना शाह राह्ल गुप्ता						

स्टाफ के परिवार के सदस्यों के लिए आयोजित प्रतियोगिताएं:-

आशुभाषण प्रतियोगिता					
प्रतिभागी का नाम	अभिभावक कर्मचारी का नाम	पुरस्कार			
कु. सौम्या रमण	श्री राजीव कुमार रमण	प्रथम			
मास्टर हर्ष सुखेजा	श्री अनिल सुखेजा	द्वितीय			
मास्टर हर्ष परमार	श्री हरिश परमार	तृतीय			
वाद विवाद प्रतियोगिता					
मास्टर अरिंजय व्यास	श्री एस. पी. व्यास	प्रथम			
कु. धृति सेठ	श्रीमती नीलू सेठ	प्रथम			
कु. ज्योति भाराणी	श्रीमती सुनिता वी. भाराणी	द्वितीय			
मास्टर राजन परमार	श्री हरिश परमार	द्वितीय			
शुतलेखन प्रतियोगिता					
मास्टर शिवम प्रजापति	श्री राधेश्याम प्रजापति	प्रथम			
कु. अमृतावर्षिनी के. अय्यर	श्री कन्नन वी. अय्यर	द्वितीय			
मास्टर आर्यन अमित गुप्ता	श्री अमित गुप्ता तृतीय				
मास्टर आदित्य वर्तक	श्री धवल वर्तक प्रोत्साहन				

कु. हनी सोनी	श्री आशिष सोनी	प्रोत्साहन			
कु. साक्षी आर. प्रजापति	श्री राधेश्याम प्रजापति	प्रोत्साहन			
मास्टर निश्चल	श्री कमलेश कुमार बराया	प्रोत्साहन			
सुलेखन प्रतियोगिता					
मास्टर इशित्व कुशवाहा	श्री सुनील कुशवाह	प्रथम			
कु. अर्चना के. अय्यर	श्री कन्नन वी. अय्यर	द्वितीय			
मास्टर कौशल मकवाना	श्री प्रकाश भाई	तृतीय			
कु. अनुष्का सिंहल	श्री आलोक सिंहल	प्रोत्साहन			
कु. वैष्णवी	श्री विजय	प्रोत्साहन			
मास्टर एम. श्रीधरन	श्री रामानुजम	प्रोत्साहन			
मास्टर प्रियाँशु दास	श्री प्रशांत दास	प्रोत्साहन			
मास्टर कपीश गुप्ता	श्री कृष्ण मोहन	प्रोत्साहन			
मास्टर बी. किशोर कुमार	श्री के. एन. बाबु	प्रोत्साहन			
अंताक्षरी प्रतियोगिता					
प्रतिभागी का नाम	विवाहिती का नाम	पुरस्कार			
श्रीमती अंकिता	श्री जैमिन शाह				
श्रीमती आरती	श्री आशिष सोनी				
श्रीमती रेन्	श्री एस. पी. मित्तल	प्रथम			
श्रीमती पूजा	श्री देवेंद्र शर्मा				
श्रीमती श्रद्धा	श्री गौरव जैन				
श्रीमती पायल	श्री उमेश कुमार				
श्रीमती माधवी	श्री राजीव कुमार				
श्रीमती मेघा	श्री उपेन्द्र गोंधलेकर	द्वितीय			
श्रीमती वर्तिका	श्री एस. पी. सिंह				
श्रीमती कीर्ति	श्री भद्रेश रावल				
श्रीमती अर्चना	श्री पीयूष कुमार टेलर				
श्रीमती साधना	श्री सच्चिदानंद				
श्रीमती सोनिया	श्री जगदीश कुमार	तृतीय			
रीमती प्रीति श्री दिनेश अग्रवाल					
श्रीमती कमलाक्षी					
श्रीमती प्रेरणा	श्री सौरव कुमार				
श्रीमती पायल	श्री विनीत भट्ट				
श्रीमती धन्या					
श्रीमती संगीता	मती संगीता श्री अनिल वैद्य				
श्रीमती खुशब्	श्री रमेश कुमार				
श्रीमती प्रतिभा	श्री विशाल अग्रवाल				
श्रीमती निरीक्षा	श्री जीतेन्द्र कुमार				
श्रीमती रूपाली	श्री मनीष गुप्ता	प्रोत्साहन			
श्रीमती लकी	Ÿ				
श्रीमती आकृति					

10 जनवरी 2016 को सैक / डेकू में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर संपन्न हिंदी प्रतियोगिताओं की झलक



हिंदी निबंध प्रतियोगिता के प्रतिभागी गण



हिंदी वार्तालाप प्रतियोगिता के दौरान परिचर्चा करते हुए प्रतिभागी गण

सैक / डेकू में संपन्न राजभाषा कार्यशालाओं की झलक



20 जून 2016 को प्रभाग प्रधानों के लिए संपन्न कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री डी.के.दास, सह निदेशक, सैक तथा सत्र संचालित करते हुए श्री बी.आर.राजपूत, व. हिंदी अधिकारी



03 मार्च 2016 को संपन्न कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री आर.एम.परमार, उप निदेशक—सेडा



19 सितंबर 2016 को संपन्न कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री एच.आर.कंसारा, डीडी–मेसा एवं सत्र संचालित करते हुए श्री बी.आर.राजपूत, सं.निदे (राजभाषा), अंवि

12 वीं तथा 10वीं कक्षा में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले सैक / डेकू के कर्मचारियों के बच्चों को पुरस्कृत करते हुए निदेशक, सैक















हिंदी में मूल टिप्पण एवं प्रारूपण हेतु लागू प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत निदेशक, सैक द्वारा पुरस्कृत प्रतिभागी गण



प्रथम पुरस्कार – श्री जैमिन शाह



प्रथम पुरस्कार – श्री मुकेश कुमार मिश्रा



प्रथम पुरस्कार – श्री किशोर डी. वाघेला

हिंदी तकनीकी संगोष्ठी 2016 का प्रमाण-पत्र वितरण समारोह



प्रमाण-पत्र देते हुए श्री डी.के.दास, सह निदेशक



प्रमाण-पत्र देते हुए श्री राजीव ज्योति, अध्यक्ष संगोष्ठी आयोजन समिति / डीडी-एमआरएसए



प्रमाण-पत्र देते हुए श्री विरेन्दर कुमार, निदेशक-डेकू